तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय कोटा, क्र.2

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

विद्यालय पत्रिका 2016-17

स्वतंत्रता दिवस समारोह

मुख्य अतिथि महोदया की अगवानी करते हुए विद्यालय स्काउट्स

छात्राओं द्वारा सामूहिक नृत्य की रोचक प्रस्तुति

नन्हें कलाकारों द्वारा सामूहिक नृत्य प्रस्तुति

देशभक्ति गीत पर रंगारंग सामूहिक नृत्य प्रस्तुत करते हुए छात्र-छात्राऐं

देशभक्ति के भावों से भरे हुए रोचक नृत्य की प्रस्तुति

विद्यालय की विजेता खिलाड़ियों का सम्मान एवं पुरस्कार वितरण करते हुए मुख्य अतिथि महोदया एवं विद्यालय प्राचार्य

VIDYALAYA PATRIKA 2016-17

CHIEF PATRON
Shri Y. Arun Kumar
D.C., KVS, R.O. Agra

PATRONS
Shri R.K. Vashishtha
A.C., KVS, R.O. Agra

Shri Shekhar Jakhoria
Principal, K.V. No.2, Kota

EDITORIAL BOARD

Editor in Chief
Shri R.K. Jatav
PGT (Hindi)

English Section
Shri Ram Chandra, PGT (Eng.)
Smt. Alka Shukla, TGT (Eng.)
Smt. Alka Gupta, TGT (Eng.)

Hindi - Sanskrit Section
Smt. Vandana Yagnik, TGT (Hindi)
Shri H. M. Meena, TGT (Sanskrit)

Cover Page Design
Shri R. R.Nagar (Drawing Teacher)

Student Editors
Ma. Saavya Saachi Shekhar (XII Commerce)
Ms. Kirti Raghav (XII Science)

Y.Arun Kumar

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Message

I am extremely happy to learn that Kendriya Vidyalaya, No. 2 Kota is bringing out the 'Vidyalaya Patrika' for the session 2016-17.

Kendriya Vidyalaya, No. 2 Kota is a premier institution which not only imparts quality education but also aims for all-round development of every student keeping in view the 'Indian values and culture'. I believe that Vidyalaya Patrika will reflect the hidden potential and creativity of the students. The Vidyalaya Patrika is a mirror of various curricular and co-curricular programmes and achievements which help in developing multidimensional creativity among the students.

I congratulate the Principal, staff and students in their creative endeavour in bringing out the Vidyalaya Patrika and wish them success in their efforts.

(Y. Arun Kumar)
Deputy Commissioner
KVS, Agra Region

सीमा कुमार
Seema Kumar
IRTS

मण्डल रेल प्रबन्धक
पश्चिम मध्य रेल, कोटा
Divisional Railway Manager
West Central Railway, Kota
Ph.: 0744-2467000 (Off.)
Fax : 0744--2467159

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, कोटा सत्र 2016–17 में सम्पन्न होने वाले कार्यकलापों की झाँकी एक पत्रिका के रूप में प्रदर्शित करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो भविष्य के प्रतिष्ठित लेखक व लेखिकाओं को जन्म देता है। मुझे उम्मीद है कि विद्यालयी गतिविधियों के अतिरिक्त यह पत्रिका भावी लेखकों की प्रारंभिक अभिव्यक्ति को उचित और अधिक स्थान प्रदान करेगी। मेरी ऐसी अपेक्षा है कि हिन्दी भाषा में अभिव्यक्त रचनाओं को अधिक स्थान व प्रोत्साहन प्रदान किया जायेगा।

विद्यालय के शिक्षकवृन्द, सम्पादक मंडल, विद्यार्थीवर्ग तथा प्राचार्य को मैं बहुत–बहुत बधाई व अभिनन्दन प्रेषित करती हूँ।

सीमा कुमार
मंडल रेल प्रबंधक, एवं
अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंध समिति
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2, कोटा

(रामनिवास)
Ram Niwas

वरिष्ठ मण्डल कार्मिक अधिकारी
पश्चिम मध्य रेल, कोटा

संदेश

मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 02, कोटा सत्र 2016–17 के लिए ''विद्यालय पत्रिका'' का प्रकाशन करने जा रहा है। इस सम्बन्ध में प्राचार्य, शिक्षकों द्वारा किये गये अथक प्रयास तथा विद्यार्थियों की भूमिका सराहनीय है। विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन विद्यालय के विद्यार्थियों व शिक्षकों को अपने अनुभव तथा विचारों को अभिव्यक्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है और इस प्रक्रिया में वे अपने अन्दर रचनात्मकता विकसित करने में सक्षम बनते है। विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों के बौद्धिक व सामाजिक संस्कृति को प्रदर्शित करने का एक सशक्त माध्यम है। उनका अभिव्यक्ति कौशल उभरकर प्रत्यक्ष नजर आता है तथा साथ ही लेखन क्षमता में निखार आता है।

मुझे विश्वास है कि केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 02 कोटा के विद्यार्थी और शिक्षकगण इस विद्यालय पत्रिका में अपने नव– प्रवर्तन युक्त विचार और बुद्धिविलास से सराबोर सुपाठ्य सामग्री से पाठकवर्ग को गुदगुदाकर उन्हें प्रभावित कर सकेंगे। विद्यालय के सकारात्मक व एकीकृत प्रयासों से शैक्षणिक संस्कृति के उत्थान का मार्ग तय करने में विद्यालय पत्रिका की महती भूमिका होगी।

मैं हृदय से विद्यार्थियों, शिक्षकगणों व प्राचार्य को विद्यालय पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई व शुभकामनाऐं देता हूँ।

नामित अध्यक्ष
विद्यालय प्रबंध समिति
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 02, कोटा एवं
वरि. मण्डल कार्मिक अधिकारी
पश्चिम मध्य रेल, कोटा

Shekhar Jakhoria
Principal

From the Principal's Desk

Dear Readers,

I feel immensely delighted to present you this edition of 'Vidyalaya Patrika for the session 2016-17.

'VidydyayaPatrika' is not only a bouquet of feelings expressed by our students in the form of their articles, collection of jokes, poems, and drawing and painting, it is a medium through which they get a chance to explore themselves and share their feelings and imagination with the readers. It is also one of our efforts to provide our students with another platform to show case their hidden potential and talent.Furthermore, VidyalayaPatrika also highlights the glimpses of various activities and achievements of students and staff.

I am sure our readers will certainly have reasons to appreciate the creativity and achievements of our students in various activities and competitions held at school, cluster and national level.

We are committed to empower our students not only with knowledge but also a good character which is desired to become a true citizen of the nation. We also try to put in our best to ascertain a congenial atmosphere for each child studying in the Vidyalaya.

At last, I express my thanks and gratitude to the students, editorialboard and members of the staff for their support and cooperation in the publication of this issue of the VidyalayaPatrika. I also express my sincere gratitude and thanks to **Shri Santosh Kumar Mall, I.A.S.,** Commissioner, K.V.S. New Delhi; Sh. Y. Arun Kumar, Deputy Commissioner, K.V.S., R.O. Agra and Ms. Seema Kumar, D.R.M., W.C.R., Kota and Chairman, V.M.C., K.V.-2 Kota for their blessings and guidance.

ShekharJakhoria
Principal

संपादक की ओर से.....

रामकिशन जाटव
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात से सिल पर परत निशान।।
'गोस्वामी तुलसीदास'

निरन्तर अभ्यास व्यक्ति को सिद्धहस्त बना देता है, इसमें लेश भी सन्देह की गुंजाइश नहीं। केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2 कोटा के नवागत रचनाकार लेखन क्षेत्र में एवं रचनात्मक संसार में अभ्यासरत हैं – इसकी साक्षी है यह वर्ष 2016–17 की यह विद्यालय पत्रिका। इन नन्हें नौनिहालों का रचना संसार कबीर, तुलसी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र व प्रेमचन्द सरीखे साहित्य मर्मज्ञों की सी दूरदृष्टि व सूझ–बूझ से सराबोर भले ही न हो लेकिन उनकी परम्परा निर्वहन की जो सुगन्ध इन्होंने विकीर्ण की है– उसकी अनुभूति इस पत्रिका के अवलोकन मात्र से हो जाती है।

बाल मनोविज्ञान के अनुसार हर बच्चा खास है। हर किसी बालक में कोई न कोई, किसी न किसी तरह की प्रतिभा अन्तर्निहित होती है लेकिन अक्सर हम यह गलती कर बैठते हैं कि उसकी उस प्रतिभा पर हमारी नज़र ही नहीं जाती– हम पहचान नहीं पाते। मगर विद्यालय पत्रिका बच्चों की उस अन्तर्निहित प्रतिभा को उजागर करने का जरिया है। मैं उन नन्हें रचनाकारों का साधुवाद करना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपने लेख /आर्टिकल अत्यंत सूझ–बूझ से लिखे हैं और भविष्य के नन्हें नौनिहालों के लिए मार्गप्रशस्त किया है। यह पत्रिका बच्चों के सर्वांगीण विकास की एक सीढ़ी है।

गुरू को ईश्वरतुल्य इसलिए कहा गया है– वह दूसरों के लिए ईश्वर के समान ही ज्ञान–प्रकाश देता है, उन्हें राह दिखलाता है। विद्यालय के योग्य शिक्षक साथियों के कुशल मार्गदर्शन में लेखन कला की जो पताका फहरा उठी है–उसके लिए उनका साधुवाद। आपके दिशानिर्देशन से ही बच्चों की अन्तर्निहित क्षमता से सब रूबरू हो सके हैं।

विद्यालय के प्राचार्य श्री शेखर जखोड़िया की दूरदृष्टि, शिक्षा के क्षेत्र में गहरी समझ व अनुभवशीलता– शिक्षकों में जोश भरने में कामयाब तो है ही साथ ही विद्यार्थी वर्ग भी उनकी प्रेरणाशक्ति से शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए तत्पर रहता है। प्राचार्य जी की कार्य प्रणाली से विद्यालय में विशिष्ट ऊर्जा का संचार हो सका है जिससे विद्यालय ने बेहतर परीक्षा परिणाम देकर कीर्तिमान स्थापित किया है।

विद्यालय प्रबन्ध समिति की अध्यक्ष एवं मंडल रेल प्रबंधक प.म.रे. कोटा– श्रीमती सीमा कुमार की सकारात्मक सोच, विद्यालय के विकास में सदैव अहम भूमिका निभाने की तत्परता, केन्द्रीय विद्यालय के माध्यम से समाज को गुणवत्ता की शिक्षा दिलाने का उनका संकल्प तथा राजभाषा हिन्दी का उत्थान– सरीखे कार्य उन्हें आदर और श्रद्धा के योग्य बना देते हैं। विद्यालय परिवार उनका आभार व्यक्त करता है।

मैं इस अवसर पर उन सभी अभिभावकों का भी धन्यवाद करना चाहूँगा जिन्होंने हमारे विद्यार्थियों को विद्यालय पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख इत्यादि लिखने हेतु प्रेरित किया। मैं विद्यालय परिवार की ओर से बच्चों की सम्पूर्ण सफलता पर उनके उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

रामकिशन जाटव
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

Thomas Alva Edison

Thomas Alva Edison,
A most unusual boy,
Never really bothered much
with any childish toy.
His teacher thought he could't learn
And sent him home from school,
But Jommy's mother knew for sure
He wasn't any fool.

He worked as news boy on a train,
He learnt to telegraph
The way he concentrated
Made some people laugh.
Thomas Alva Edison
Had inventions by the score
In his laboratory
He kept inventing more

The phonograph, electric light
(with fuses, sockets, too),
A super storage battery,
And movies, were a few.
If not for Mr. Edison
How dull our lives would be!
We might not have the radio,
The X-Ray, or T.V.

Name : **Vansh Mamgai**
Class : V Sec. 'B'

My Garden Smiles

My Garden smiles
Welcoming the spring,
Roses, beautiful roses,
With fragrance and beauty,
Ringing tunes of the honey bees
Lovely scene, everywhere
My garden smiles.

The enchanting scence entered into me
Blossomed happiness in my body and
variety of roses,
One lovely family of roses,
Presiding the dynamic scene
With pleasant fragrant breeze,
My garden smiles.

All the roses fully blossomed towards the sky
It was a miracle to See.
A pleasant beautiful Voice,
Echoed from rose family,
O' my friend, look at the Sky
I saw the miracle of
The shining moon in formation
And the powerful venus very close.
To each other belong to our galaxy

Name : **Disksha Kumari**
Class : XI Comm.

Story : The Lion an The Mouse

One day a mouse ran over a sleeping lion, The amgry lion woke up and caught the mouse. The mouse begged the lion to free him. "I will save you one day," said the mouse. The lion laughed, and freed the mouse. some days later, the lion was caught in a net by some hunters. He began to roar. The mouse heard the lion and ran to help him. It cut the net and freed the lion. Even a small mouse could save a mighty lion.

Remember : One good turn deserves another

Name : **Varsha Meena**
Class : IVth 'B'

Mistake

If a barbar makes a mistake
It's a new style
If a driver makes a mistake
Its's an accident
If an engineer makes a mistake
Its's a new venture
If a politician makes a mistake
Its's a new law.
If a scientist makes a mistake
Its's a new in invention
If a tailor makes a mistake
Its's a new fashion
If a student makes a mistake
Its's always a mistake

By : **Pankaj Kumar**
Class : XIth Comm.

Who Am I ?

1. I am a small room,
With only doors and no windows.
No matter what the weather is outside,
My residents are always cold.
WHO AM I ?
2. Take away my first letter
Take away my second letter,
Take away my third and fourth,
and yet I remain the same.
WHO AM I ?
3. I am my father's child,
And my grand father's grand child.
I ever have a sister,
But I am no one's son.
WHO AM I ?
4. You see me at the end of a letter,
And at the beginning of a record.
I am stuck between birds,
But never found in the sky.
WHO AM I ?

Answer : Who am I ?
1. Refrigerator 2. Postman
3. Daughter 4. The letter 'r'

Cleanliness

Clean your school and city
Be united and pledge,
to clean each corner and edge.

Enhance the school's beauty,
Dispose garbage wisely,
and set an example for the next generation.

Dispose the waste at proper place,
adopt the three R's - Reduce, reuse and recycle,
to do away with the garbage.

Friends

Friends are those with whom we share,
they stand with us to face every fear,
they are always with us to make us laugh.
you love them, they love you,
and they care for you too.
So, friends in need
are friends indeed.

Name : **Manali Mahawar**
Class : XIIth Commerce

How much do you know ?

Q. 1) Kevlar is a high-strength fibre that is five times stronger than steel. Who developed it.

a) Steph once kwolek

b) Rosalind Franklin

c) Michaol Fara day

d) Louis Pateur

Q.2) Whcih is the largest gulf

a) Yulf of Mannar

b) Yulf of Merico

c) Yulf of Hondurees

d) Yulf of Maine

Q.3) In which year was the Indian national anthem sung for the first time

a) 1927

b) 1947

c) 1941

d) 1911

Q.4) Who was the first Indian to win a medal at olympics

a) Dhyan Chand

b) Leander Paes

c) K.D. Jadhav

d) Abhinav Bindra

Answer : 1. a, 2. b, 3. d, 4. c

Name : **Pragya Faujdar**

If I were as small as an Ant

If I were as small as an Ant,
I would travel the world with my tiny feet

There will be no elders to scold me,
or siblings to fight with me

Humans will look like giants,
and the mosquitoes seem like birds

No one will ever tell me what to do,
I'll play and have fun all day long

My Mother

No one can take your place
your are every thing to me.
your hugs are warm
and make me happy
you nurse me whenever I' m sick
you feed me when I' m hungry
you help me in my studies
you are my guide
Whenever I go wrong you show me the right path
I love you forever my mom

Name : **Ankita Choudhary**
Class : XIIth Commerce

Life Style And Wellness

We Live in time and space, having an unceasing struggle with our environment both animate and inanimate. With an indefeatable attempt to maximize our life chance, The possibility of our enduring existence, we constantly evolve the ways of having, and modifying the existing procedures, norms, and customers. To understand these, we make use of the concept of 'Life style'.

Life style is possibility related with the ailments we periodically have. Some illnes have their oigin in the bio-genetic structure, while the others result from the way in which we live. If we search the internet, we find that 'lifestyle diseases' are understood as the diseases caused by logevity and the impact of development. They are also defined as the diseases that follow the advent of civilization. The meaning, however, is parochiar, for there are diseases repoted from the so-called simple. An eminent example to be citied here is of kurv, the nevro muscular diseases sound among the highlanders in papua and new guinea which was caused by the eating of the tit-bits of the diseased human brain. Thus, instead of restricting concept of lifestyle diseases to the developed world, it should be extened to all communities irrespective of their level of development, that have enduring patterns of living.

Name : **Shahrukh**
Class : XIIth Commerce

Health Benefits of Peas .....

peas are really little powerhouses of nutrition that are a boon for your health and the whole planet. We'll start with the benifits of this tasty powerfood.

1. Weight Management :

Peas are low-fat but high- everything-else. A cup of peas was less than 100 calories but lots of protein, fiber and micronutrients.

2. Stomach cancer provention :

Peas contain high amounts of a health-protective polypheno called coumestrol. A study in mexo city determined that you only need 2 milligrams per day of this plytonutrient to help prevent stomach cancer.

3. Blood sugar regulation :

Peas high fibre and protein slows down how fast sugars are digested. Their antioxidants and anti inflammatory agents permeate insulin resistance.

4. Heart disease prevention :

The many antioxidents and anti-inflammatory compounds in peas support healthy blood tissues wall start with chronic, excessive stress and inflammation. The generous amount of vitamin B1 and folate, B2, B3 and B6 reduce enomocysteine level a risk factor for calcium inside the bones. Its B vitamin also helps to prevent osteoporosis.

Name : **Tanvi Khan**
Class : XIIth Commerce

Patriotism

Patriot is one who loves and serves his own country as a loyal citizen. He is called a true patriot who loves his country and is ready to sacrifice his all for her cause, and whole heartedly works for the welfare of his motherland.

The land on which one is born and brought up and lives is naturally dear to him than any other land. This is how for his birthplace grows into patriotism.

If his motherland is attacked by the enemies, he does not hesitate to tight for the protection of freedom of his mother land. He can do any thing to glorify his country. He feels proud of his country. This patriotic feeling can be found in many great heroes in history.

In India, we know many patriots who suffered in-human distress at the hands of the foreign rulers, because they loved their country, and wanted to make her free from the shackles of the foreign rule. A True patriot will go to the war with suiting face to sacrifice his life if needed. He will serve the poor and the distressed people of his country out of compassion that arises from patriotism. A true patriot is worshipped by his countrymen. They shed tears when he dies as if, he was one of their nearest relations.

Patriotism is the willingness to kill and be killed for true reasons

Name : **Sarthak Mahajan**
Class : XIth Science

National Integration

National Integration is the feeling of togetherness or oneness towards one's own country irrespective of their individual differences with regard to religion, region, race, culture or caste.

India is a multi-racial and multingual country. These diversities are the feature of India. But the culture of India makes her people feel that they are the children of mother land. India is an excellent example of 'Unity in Diversity'. Foreign invasions and conguests from time to time, could not crush the spirit of unity of culture.

In ancient times, India was divided in many small kingdoms and the kings of these kingdoms were engaged in fighting with each other for political power. But there was no issue of religion. In the last century when british was ruling over India and the Indian people began their movement against the british rulers for the freedom of their motherland. The rulers tried to disturb the national integration of our country by applying the 'divide and rule' policy to curb the movement.

(If we never forget that we are one nation under god, then we will be a nation gone under integrity, doing the right thing, even when no one is watching.)

Name : **Sarthak Mahajan**
Class : XIth Science

Friendship - Bond of Love

Friendship is a treasure of gold,

But cannot be bought or sold.

True friendship tastes forever,

And the bond of it cannot be separated,

By God forever.

When difficulities arise and there is no way,

When all people against you in the world,

It is a true friend that may fight for.

You with the whole world.

Friendship cannot be brought,

It comes, from the botton of the heart.

Fights in the world will never come to an,

end....

It is only the bond of friendship that can,

change an enemy into a friend.

Very few can feel the importance of true,

Friendship.

Experience the love of this relation

Name : **Khushi Malav**
Class : Xth 'B'

Save Girl Child : I am a little girl

Frightened in the mother's world.
I am a little girl,
Near to be born.

My Mother is shivering and apologizing,
I am a little girl,
In danger.

Watching my brother,
Playing and studying in school,
I am a little girl,
wishing to be treated equally.

Now a teen,
Being stared by dirty eyes,
I am a little girl,
Trying to get away from that, night.

Being ill treated by my husband,
I am a little girl,
Trying to be alone.

Near to be a mother,
I am a little girl,
Being tortured, for a son.

Name : **Khushi Malav**
Class : X 'B'

Some Amazing Facts

- An ostrich's eye is bigger than it's brain.
- You can't rill your self holding your breath.
- A cockroach can live several weaks with its head cut off.
- Camels have eyelids to protect himselves from blowing sends.
- Women blink nearly twice as much as men.
- Coca cola would be green if colouing weren't added to it.
- The average lead pencil will draw a line 35 miles long or write appoximately 50,000 english words.
- Dolphins sleep with one eye open.
- In 1386, a pig in france was executed by public hanging for the murder of a child.

Name : **Tushar Sharma**
Class : XI 'A'

"Nature is A Beautiful Gift"

When the beautiful morning appears
The rays of rising sun kiss her

When the Garden of nature open its heart
The garden of flower hugs her to welcome

When the trees dance to tune of wind
The Birds sing to the nature's choir.

When gentleness of nature is filled with pleasure
Then the curtain gets wet with weather

When the nature forgets its vastness
Then the god shows how big is her
place on carth

Let us thank god for giving us
Eyes to see lovely gifts of nature

Name : **Tushar Sharma**
Class : XI 'A'

Sachin Tendulkar
(Cricket)

Sachin Tendulkar is the superstar of the Indian Cricket. He has brought several laurels for India. His talent is appreciated not only by the people living in India but also by those who live abroad. He was born on april 24, 1973 in Mumbai. He was very much impressed by Kapil Dev and wanted to be great like him. He worked hard to realise his dream. He began to play cricket at a very tender age. i.e., 15. He became the youngest Indian champion of Indian cricket, when he had yet not reached the age of 17. However, it was the year 1988 during which he broke the, 74 years old world record of establising a third wicket partnership of 644 runs in the Mari's shield semifinals. In the final, he served another tripple century. It was really a great achievement for him.

His test runs are 14000 and one day runs are 18000. I am a great fan of Sachin Tendulkar Sachin Tendulkar's name is taken with reverence. He is the God of the Cricket world.

Name : **Anjali Sharma**
Class : VII 'A'

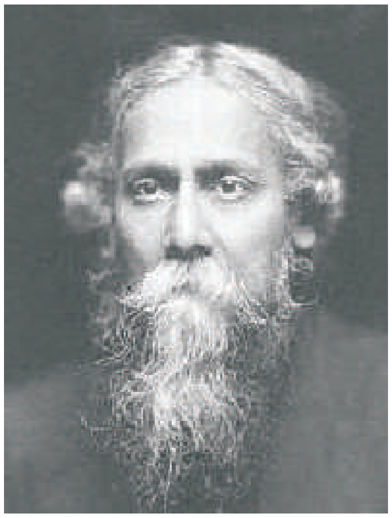

Rabindranath Tagore
(History)

Rabindranath Tagore became the primary asiatic to become altruist laureate when he won altruist reckon for his accumulation of poems, Gitanjali, in 1913, awarded knightood by the British Saint George V, reognized Viswabharat lincolon, two songs from his Rabindra sangit ravine are now the domestic anthems of India and Bangladesh. Rabindranath Tagore was an painting of amerindian civilisation. He was a laureate, philosopher, musician, writer, and educationist. Rabindranath Tagore became the front indweller to become Philantrhropist laureate when he won Philanthropist value for his compendium of Poems, Gitanjali, in 1913. He was popularly known as Gurudev and his songs were popularly famed as Rabindrasangeet. Two songs from his Rabindrasangit canon are now the general anthems of Bharat and Bangladesh the Jana Gana Mana and the Armar Bangla Rabindranath tagore was intelligent on May 7, 1861 in a wealthy Hindoo phratry in calcutta.

Name : **Priyanshu Gadhwal**
Class : VIII 'A'

Time

1) Time is money as sweet as honey.

Time is priceless, its wastage is senseless.

2) Time is useful so be careful.
Every second is valuable.

3) Time, doesn't wait for anyone.
so be punctual everyone.

Name : **Toshit Babbar**
Class : XII Commerce

Listen to my voice

Listen to my voice and
Let me come to this world to
Shine like a beautiful star
In the darkest hour.

Listen to my voice and,
Let me come to this world to
fly like a beautiful bird
and make all happy

Listen to my voice and
Let me come to this world to
flow like a brimming river
forever with you

So please let me come to this world to
Make this world a beautiful place to live in

Name : **Jigyasa Meena**
Class : VII 'A'

Advantages of Solar Energy

1. Eco friendly. No emission of green house gases. There is no rise in temprature.
2. unlimited fuel source. The Earth receives solar insolation which is sereral times higher than anticipated futuristic needs of humanity.
3. Silent operation. Photovotaic panels canvert light into electricity without any voise
4. Modular in nature. system capability can be enhanced for future requirement by adding more photovoltaic panels.
5. Reduced cast. Distribution cast is minimum as electricity is generated close to the place where it is utilized.
6. No fuel transport. Fuel transport problem is eliminated.
7. Independent operation. Less dependency on electricity supply agencies as everything is in user's control.
8. Safety. Safety of personnel working in agriculture field is ensured as distribution transformers and high voltage lines are not required. Today low voltage DC motors of any required power are available in the market for water lifting applications. Besides, photovoltaic system are immune to natural disasters like floods, cyelones etc.
9. Single time investment. A photovoltaic powered water lifting system without battery back up can aperate upto 25 years with same initial efficiency.

Name : Harshita Indoria
Class : X 'B'

My Favourite Holiday

My favourite holiday is the summer holidays.

It is the time my mother makes my favourite cream eggs.

During Summer, I like to write letter to all my friends. I also like to go for a swim and play my musical keyboard.

I help my mom prepare my favourite dish and play with my dad the whole day.

Name : **Nakul Sain**
Class : X 'B'

Smile

It is up to you to smile
don't lose it even for a while

your smile with cheer up someone
brighter their day and your own.

face your troubles bravely
you may be sad,
but a smile will help you be positive

Do not hesitate and always smile
it brings happiness like sunshine

There is no cost or fine,
It's your and mine for free.
so smile and always smile

Name : **Rishabh Ranawat**
Class : X 'B'

Nature

Nature includes trees,
On which fruits grow nicely.

Natrure includes flowers,
which blooms so beautifully.
Nature includes birds,

which fly from here to there,
far and near and to every place.

Nature is our world,
that we should keep safe.

Name : **Samarth Kumar**
Class : X 'B'

Lets find out

How is surface tension useful ?

Many waterproof tents are not exactly waterproof and yet the water still does not seep in. This is because the surface tension in the water droplets does not allow the water to flow through the pores of the tent material.

But if you push against the water droplets, then it will go through the pores beacause surface tension can not hold against the force applied by your finger. You would have noticed this property of water on a rainy day the water formes droplets against the window instead of spreading out.

Name : **Rishabh Sharma**
Class : X 'B'

Holi is fun

Holi is celebrated in march every year. It is also known as festival of colours. It marks the beginning of spring. It is celebrated by everyone. People play Holi with pichkaris and water ballons people prepare sweets like ghunjia on Holi. Some people even play pranks with colours. I eagerly look forward towards Holi every year.

Name : **Jaiprakash**
Class : X 'B'

My wish

I wish for -

Hopes that never go away.

Peace that Never changes to ugliness.

and that the people who have a heart of gold

Never change to stone.

Remember growing stars,

India is your mother land.

Please don't Make it a dirty land.

Name : **Vijendra Meena**

Think about

Why did the water not spill over the edges ?

This is because of a property of water called surface tension. The structure of water molecules is such that they stick lightly together so, as more water is added on the coin, the water molecules pull each other inward and stick together strongly forming a droplet. However, as you keep adding more water, the surface tension can no longer hold against the pull of gravity and the water eventually spills out.

Turn it into a game, see how many drops of water you can add till the droplet breaks and challenge your friends to get more.

Name : **Rishipal Singh**
Class : X 'B'

How do you think

If you think you are better you are.

If you think you dare not, you don't.

If you'd like to win, but you think you can't.

It's almost certain you won't.

If you think you'll lose, you're lost.

For out in the world we find

Success begins with a fellow's will

it's all in the state of mind.

If you think you're out classed. you are

You've got to think high to rise

You've got to be sure of yourself

Name : **Ritu Meena**
Class : XI Commerce

A. P. J. Abdul Kalam

Avul Pakir Jainulabdeen Abdul Kalam (15 October 1931 – 27 July 2015) usually referred to as **Dr. A. P. J. Abdul Kalam**, was an Indian scientist and administrator who served as the 11thPresident of India from 2002 to 2007. Kalam was born and raised in Rameswaram, Tamil Nadu, studied physics at the St. Joseph's College, Tiruchirappalli, and aerospace engineering at the Madras Institute of Technology (MIT), Chennai.

Before his term as President, he worked as an aerospace engineer with Defence Research and Development Organisation (DRDO) and Indian Space Research Organisation(ISRO). Kalam is popularly known as the *Missile Man of India* for his work on the development of ballistic missile and launch vehicle technology.He played a pivotal organizational, technical and political role in India's *Pokhran-II* nuclear tests in 1998, the first since the original nuclear test by India in 1974. Some scientific experts have however called Kalam a man with no authority over nuclear physics but who just carried on the works of Homi J. Bhabha and Vikram Sarabhai. Kalam was elected the President of India in 2002, defeating Lakshmi Sahgal and was supported by both the Indian National Congress and the Bharatiya Janata Party, the major political parties of India.

Kalam advocated plans to develop India into a developed nation by 2020 in his book *India 2020*. Books authored by him have received considerable demands in South Korea for the translated versions. He has received several prestigious awards, including the Bharat Ratna, India's highest civilian honor. Kalam is known for his motivational speeches and interaction with the student community in India. He launched his mission for the youth of the nation in 2011 called the *What Can I Give Movement* with a central theme to defeat

Early life and education

A. P. J. Abdul Kalam was born on 15 October 1931 in a Tamil Muslim family to Jainulabdeen, a boat owner and Ashiamma, a housewife, at Rameswaram, located in the South Indian state of Tamil Nadu. He came from a poor background and started working at an early age to supplement his family's income. After completing school, Kalam distributed newspapers in order to financially contribute to his father's income. In his school

years, he had average grades, but was described as a bright and hardworking student who had a strong desire to learn and spend hours on his studies, especially mathematics.

"I inherited honesty and self-discipline from my father; from my mother, I inherited faith in goodness and deep kindness as did my three brothers and sisters."
—A quote from Kalam's autobiography[1]

After completing his school education at the Rameshwaram Elementary School, Kalam went on to attend Saint Joseph's College, Tiruchirappalli, then affiliated with the University of Madras, from where he graduated in physics in 1954. Towards the end of the course, he was not enthusiastic about the subject and would later regret the four years he studied it. He then moved to Madras in 1955 to study aerospace engineering. While Kalam was working on a senior class project, the Dean was dissatisfied with the lack of progress and threatened revoking his scholarship unless the project was finished within the next two days. He worked tirelessly on his project and met the deadline, impressing the Dean who later said, "I [Dean] was putting you [Kalam] under stress and asking you to meet a difficult deadline"

Career as scientist

This was my first stage, in which I learnt leadership from three great teachers—Dr. Vikram Sarabhai, Prof. Satish Dhawan and Dr. Brahm Prakash. This was the time of learning and acquisition of knowledge for me.-- A. P. J. Abdul Kalam

After graduating from Madras Institute of Technology (MIT – Chennai) in 1960, Kalam joined Aeronautical Development Establishment of Defense Research and Development Organization (DRDO) as a scientist. Kalam started his career by designing a small helicopter for the Indian Army, but remained unconvinced with the choice of his job at DRDO. Kalam was also part of the INCOSPAR committee working under Vikram Sarabhai, the renowned space scientist. In 1969, Kalam was transferred to the Indian Space Research Organization (ISRO) where he was the project director of India's first indigenous Satellite Launch Vehicle (SLV-III) which successfully deployed the *Rohini* satellite in near earth orbit in July 1980. Joining ISRO was one of Kalam's biggest achievements in life and he is said to have found himself when he started to work on the SLV project. Kalam first started work on an expandable rocket project independently at DRDO in 1965. In 1969, Kalam received the government's approval and expanded the program to include more engines.

In 1963–64, he visited Nasa's Langley Research Center in Hampton Virginia, Goddard Space Flight Center in Greenbelt, Maryland and Wallops Flight Facility situated at Eastern Shore of Virginia. During the period between the 1970s and 1990s, Kalam made an effort to develop the Polar SLV and SLV-III projects, both of which proved to be success.

Kalam was invited by Raja Ramanna to witness the country's first nuclear test Smiling Buddha as the representative of TBRL, even though he had not participated in the development, test site preparation and weapon designing. In the 1970s, a landmark was achieved by ISRO when the locally built *Rohini-1* was

launched into space, using the SLV rocket. In the 1970s, Kalam also directed two projects, namely, *Project Devil* and *Project Valiant* , which sought to develop ballistic missiles from the technology of the successful SLV programme. Despite the disapproval of Union Cabinet, Prime Minister Indira Gandhi allotted secret funds for these aerospace projects through her discretionary powers under Kalam's directorship. Kalam played an integral role convincing the Union Cabinet to conceal the true nature of these classified aerospace projects. His research and educational leadership brought him great laurels and prestige in 1980s, which prompted the government to initiate an advanced missile program under his directorship. Kalam and Dr. V. S. Arunachalam, metallurgist and scientific adviser to the Defense Minister, worked on the suggestion by the then Defense Minister,R. Venkataraman on a proposal for simultaneous development of a quiver of missiles instead of taking planned missiles one by one R Venkatraman was instrumental in getting the cabinet approval for allocating 388 crore rupees for the mission, named Integrated Guided Missile Development Program (I.G.M.D.P) and appointed Kalam as the Chief Executive. Kalam played a major part in developing many missiles under the mission including Agni, an intermediate range ballistic missile and Prithvi, the tactical surface-to-surface missile, although the projects have been criticised for mismanagement and cost and time overruns. He was the Chief Scientific Adviser to the Prime Minister and the Secretary of Defence Research and Development Organisation from July 1992 to December 1999. The *Pokhran-II* nuclear tests were conducted during this period where he played an intensive political and technological role. Kalam served as the Chief Project Coordinator, along with R. Chidambaram during the testing phase. Photos and snapshots of him taken by the media elevated Kalam as the country's top nuclear scientist.

In 1998, along with cardiologist Dr.Soma Raju, Kalam developed a low cost Coronary stent. It was named as "Kalam-Raju Stent" honouring them. In 2012, the duo, designed a rugged tablet PC for health care in rural areas, which was named as "Kalam-Raju

Presidency

Kalam served as the 11th President of India, succeeding K. R. Narayanan. He won the 2002 presidential election *by Lakshmi Sahgal. He served from 25 July 2002 to 25 July 2007.*

During his term as President, he was affectionately known as the *People's President*

Kalam is criticized for inaction as a President in deciding the fate of 20 out of the 21 mercy petitions. Article 72 of the Constitution of India empowers the President of India to grant pardon, suspend and remit death sentences and commute the death sentence of convicts on death row. Kalam acted on only one mercy plea in his 5 year tenure as a President, rejecting the plea of rapist Dhananjoy Chatterjee, who was hanged thereafter. The most important of the 20 pleas is thought to be that of Afzal Guru, a Kashmiriterrorist who was convicted of conspiracy in the December 2001 attack on the Indian Parliament and was sentenced to death by the Supreme Court of India in 2004. While the sentence was scheduled to be carried out on 20 October 2006, the pending action on the mercy plea resulted in him continuing in the death row.

Personal attacks

In spite of his leading role in the development of Indian nuclear programme, Kalam has received criticism from many of his peers who claimed that he had "no authority" over nuclear science. Homi Sethna, a chemical engineer criticised Kalam claiming that Kalam had no background in publishing articles in nuclear science, even in nuclear physics. Sethna maintained that Kalam received his master's degree in aerospace engineering, which is a completely different discipline from nuclear engineering, and what various universities awarded him for his achievements had nothing to do with nuclear physics. Sethna, in his last interview, maintained that in the 1950s, Kalam had failed advanced physics courses during his college life and quoted "What does he know (about [nuclear] physics)....?", on the national television. Homi Sethna also accused Kalam of using his presidency to gain a national stature of a nuclear scientist.

Others felt that Kalam had never worked in any of the Indian nuclear power plants and had no role in developing the nuclear weapon which was completed under Raja Ramanna. Kalam worked as an aerospace engineer in a SLV project in the 1970s and from the 1980s onwards, as a project director before he moved to Defence Research and Development Organisation.

In 2008, Indian media questioned his claims about his personal contributions to missile inventions while working in a classified missile programme. The media questioned Kalam taking credit of inventing the Agni, Prithvi and Aakash missile system, while all of these were developed, researched and designed by a group of scientists headed by Kalam and he was involved in getting the funds and other logistic tasks. R. N. Agarwal, former director, Advanced System Laboratory and former Program Director of Agni missile was considered to be the real architect behind the successful design of Agni Missile. In his own biography, Kalam credited the development of Agni missile to Dr. Ram Narayan Agarwal, an alumnus of MIT. For the Prithvi missile project, he named Col VJ Sundaram as the brain behind this project and for the Trishul missile, he gave credit to Commander SR Mohan. In 2006, senior media correspondent Praful Bidwai, in the *The Daily Star*, wrote that two aerospace projects, Project Valiant and Project Devil, which were authorised by former Premier Indira Gandhi under the directorship of A. P. J. Abdul Kalam, resulted in "total failure". In the 1980s, these projects were ultimately cancelled by the government under the pressure of the Indian Army.

Kalam was also criticised by civil groups over his stand on the Koodankulam Nuclear Power Plant, where he supported setting up of the nuclear power plant and never spoke with the local people. The protesters were hostile to his visit as they perceived to him to be a pro-nuclear scientist and were unimpressed by the assurance provided by him on the safety features of the plant.

Future India: 2020

In his book *India 2020*, Kalam strongly advocates an action plan to develop India into a knowledge superpower and a developed nation by the year 2020. He regards his work on India's nuclear weapons program as a way to assert India's place as a future superpower.It was reported that, there was a considerable demand in South Korea for translated versions of books authored by him.

Kalam continues to take an active interest in other developments in the field of science and technology. He has proposed a research program for developing bio-implants. He is a supporter of Open Source over proprietary solutions and believes that the use of free software on a large scale will bring the benefits of information technology to more people.

Kalam set a target of interacting with 100,000 students during the two years after his resignation from the post of scientific adviser in 1999. In his own words, "I feel comfortable in the company of young people, particularly high school students. Henceforth, I intend to share with them experiences, helping them to ignite their imagination and preparing them to work for a developed India for which the road map is already available. He continued to interact with students during his term as a President and also during his post-presidency period as a visiting professor at Indian Institute of Management Ahmedabad. and Indian Institute of Management Indore. Chancellor of Indian Institute of Space Science and Technology Thiruvananthapuram a professor of Aerospace Engineering at Anna University (Chennai). JSS University (Mysore) and an adjunct/visiting faculty at many other academic and research institutions across India.

Awards and honours

A. P. J. Abdul Kalam's 79th birthday was recognised as *World Students' Day* by United Nations. He has also received honorary doctorates from 40 universities. The Government of India has honored him with the Padma Bhushan in 1981 and the Padma Vibhushan in 1990 for his work with ISRO and DRDO and his role as a scientific advisor to the Government .In 1997, Kalam received India's highest civilian honor, the Bharat Ratna, for his immense and valuable contribution to the scientific research and modernization of defence technology in India.

Year of award or honor	**Name of award or honor**	**Awarding organization**
2012	Doctor of Laws (Honoris Causa)	Simon Fraser University
2011	IEEE Honorary Membership	IEEE
2010	Doctor of Engineering	University of Waterloo
2009	Hoover Medal	ASME Foundation, USA
2009	International von Kármán Wings Award	California Institute of Technology, U.S.A

2008	Doctor of Engineering (Honoris Causa)	Nanyang Technological University, Singapore
2007	King Charles II Medal	Royal Society, U.K
2007	Honorary Doctorate of Science	University of Wolverhampton, U.K.
2000	Ramanujan Award	Alwars Research Centre, Chennai.
1998	Veer Savarkar Award	Government of India.
1997	Indira Gandhi Award for National Integration	Government of India.
1997	Bharat Ratna	Government of India.
1990	Padma Vibhushan	Government of India.
1981	Padma Bhushan	Government of India.

Death

On 27 July 2015, Kalam travelled to Shillong to deliver a lecture on "Creating a Livable Planet Earth" at the Indian Institute of Management Shillong. While climbing a flight of stairs, he experienced some discomfort, but was able to enter the auditorium after a brief rest. At around 6:35 p.m. IST, only five minutes into his lecture, he collapsed. He was rushed to the nearby Bethany Hospital in a critical condition; upon arrival, he lacked a pulse or any other signs of life. Despite being placed in the intensive care unit, Kalam was confirmed dead of a sudden cardiac arrest at 7:45 p.m IST.His last words, to his aide Srijan Pal Singh, were reportedly: "Funny guy! Are you doing well?

Compiled By: **Surendra Kumar Gautam**

PGT-Physics

Kendriya Vidyalaya No 2 Kota

Importance of Attending Class

Class attendance facilitates learning by variety of ways. sometimes you can get the answers of your questions by hearing the comments or questions of others.

Regular class attendance requires discipline and time management skills. If a student attends his classes regulary, he will get more knowledge than the books because books have the limited data but the teacher can make you understand by mixing up the data of several books that make you understand in a better way.

Some teachers teach the lessons by their own style which makes the student to have more interest in the lesson, that makes you understand better and you can't have this by just reading out the books.

Some teachers are not text book oriented at all. They teach their own material and the text book is only used for clarification of concepts, which just make students to get participated in the subject with full concentration.

But some students think that teachers who are text book orianted couldn't make you understand better than other's. You may think that "this is waste of time to attend classes"

It is not, while your teacher teaches the text, you are suppose to be absorbing information sincerly.

At last I would like to say that no text book can explain something to you like another person can, so from my point of view try to attend each and every class with a genuine purpose.

Name : **Toshit Babbar**
Class : XII Commerce

Amazing Facts

Mandir = 6 Alphabets

Masjid = 6 Alphabets

Church = 6 Alphabets

&

Geeta = 5 Alphabets

Quran = 5 Alphabets

Bible = 5 Alphabets

They all say the same 6 - 5 = 1

God is One

Name : **Saloni Chauhan**
Class : VIII 'B'

✶ Riddles

Ques. 1. What kind of coat is always wet when you put it on ?

Ques. 2. People buy me to eat, but never eat me. What am I ?

Ques. 3. What do you call a bear without an ear ?

Ques. 4. Two things you can never eat for breakfast ?

Ques. 5. I have keys but no locks. I have a space but no room you can enter, but can't go out side. What am I ?

Ans. (1) A Coat of paint (2) A Plate (3) 'b' (4) Lunch and dinner (5) Keyboard

✶ *Some Amazing Facts*

1. There is a musical instrument that is played without anyone even touching it.
2. Vampire bats have such good eyesight that they may be able to see a cow from a distance of 429 feet
3. Boys are 3 times more likely than girls to stutter
4. Nose prints can be used to identify dogs, just like fingerprints are used to identify humans.
5. Gold melts at 10640c and boils only at 28080c
6. Earth is the only planet that is not named after a character from the greek or Roman mythology.
7. A blue whale is so big that a human being can swim through some of its largest blood vessels.
8. The average cow drinks about 4.4 literes of water and eats 43 kilogrammes of food per day.
9. It's impossible to breathe and swallow at the same time.
10. The Emperor penguin is the only bird that lays its egg directly on snow.

Name : **Sufiya Kamaal**
Class : XI Science

Indian Classical Dance :

Bharat Natyam

Indian classical dance is a form of various codified arts forms rooted in sacred indo musical theatre styles whose theory can be taken back to the Natya shashtra of Bharat muni (400 BCF)

Indian classical dances are performed inside the sanctum of the temple a according to the rituals called Agama Nartanam. Natya Shastra classifies this type of dance form as margi, or a soul liberating dance. Dances performed in royal courts to the accompaniment of classical music are called carnatakam. A Hindu deity is considered a revered royal guest in his temple, and should be offered all of the "Sixteen hospitalities" please the senses.

The term "classical" (Sanskrity : "Shastriya") was introduced by Sangeet Natak Akademi to denote the Natya Shastra - based performing art styles classical dance performances usually feature a story about good and evil. The dance traditionally presented in a dramatic manner called Nritta, which uses "clean" gestures, to narrate the story and to demonstrate concepts such as particular objects, weather, aspects of nature and emotions. Classical Indian dance is also known as Natya. Natya involves singing and abhinaya (mime acting). These features are common to all Indian classical styles of dance. In the margi form, Nritta is composed of karanas, while desi nritta consists mainly of adavus.

Bharathanatyam is a form of Indian Classical dance that originated in the temples of Tamil Nadu. It was described in the treatise Natya Shastra by Bharat around the beginning of the common era. Bharat Natyam is known for its grace, purity, tenderness, expression and poses. Lord Shiva is considered the God of this dance form. Today, it is one of the most popular and widely performed dance styles and is practiced by male and female dancers all over te world, although it is more commonly danced by women.

Name : **Tushar Sharma**
Class : XI Science'A'

DID You Know ?

Animals have eyes shaped in different ways. Eyes. of a crab are quite small but they enable the crab to look all around so the crab can sense even if the enemy approaches from behind. Butterflies have large eyes that seem to be made up of their hands of little eyes (Fig. 16.17). They can see not only in the front and the sides but in the back as well. A night bird (owl) can see very well in the night but not during the day. On the other hand, clay light birds (Kite eagle) can see well during the day but not in the night. The owl has a large conrnea and a large pupil to allow more light in its eye. Also it has on it retina a large number of rods and only a few cones. The day birds on the other hand. have more cones and few rods.

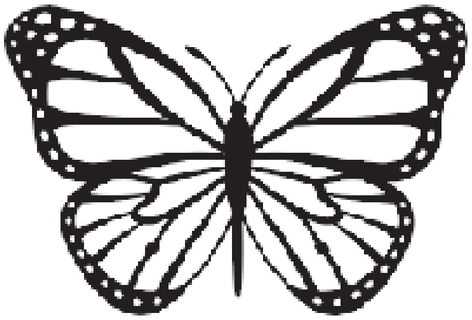

Fig. 16.17 : Eyes of a buterfly

Name : **Paras Sharma**
Class : VIII 'A'

Beauty

Beauty is seen
in the sunlight,
the trees, the birds,
corn growing and people working
or dancing for their harvest

Beauty is heard
In the sunlight
Wind sighing, rain falling,
Or a sage's chanting
Anything in earnest

Beauty is in yourself
God repeats it
In your dreams
In your work,
And even in your rest.

Name : **Gauransh Chaturvedi**
Class : VI 'A'

An Inspiring Story

Once a man was polishing his new car. His 4 yrs. old son picked up a stone and scratched lines on the side of the car. The man got very angry with him and without thinking anything he immediately took the child's hand and hit it many times, not realizing he was using a curench. At the hospital, the child lost all his fingers due to multiple fractures. When the child saw his father (withpainful eyes) he asked "Dad when will my fingers grow back ?" The man was speechless with his child's words. He went back to his car and kicked it many times. After a while..........sitting in front of his car he looked on the scratches. The child had written "Love You Dad". Next day that man committed suicide.

Anger and Love have no limits.

Always Remember : Things are to be used and people are to be loved.

Friendship - Bond of Love

Friendship is a treasure of gold.
But cannot be bought or sold
True friendship lasts forever
And the bond of it cannot be separated
By God forever.
When difficulties arise and there is no way
When all people or against you in the world
It is true friend that fights for you with the whole world.
Friendship cannot be bought
It comes from the bottom of the heart.
Fights in the world will never come to an end
It is only the bond of friendship that can change an enemy in a friend. Very few can feel the importance of true friendship.
Thank you God for making both of us experience the love of this relationship.

Name : Shakshi Gunawat
Class : XI 'A' Science

Swami Vivekananda

Narendranath Vishwanath Datta
Born : 12 January 1863
Died : 4 July 1902 (Aged 39)

Social reform was given a prominent place in Vivekananda's thought and he joined the Brahma Samaj (Society of Brahm) dedicated to eliminate child Marriage and illiteracy. He was determined to spread education among women and the lower castes. Vivekananda attempted to infuse vigor into Hindu thought, placing less emphasis on the pacifism and presenting Hindu Spirituality to the west.

Name : **Harsh Vardhan Malav**
Class : VI 'A'

Smile

It is up to you to smile,
don't lost it even for a while

Your smile will cheer up someone
brighten their day and your own

Face your troubles bravely
You may be sad,
but a shine will help you be positive

Do we hesitate and always smile
it brings happiness like sunshine

There is not cost or fine,
It's yours and mine for free
So smile and always smile

- Champalc

Name : **Aarti Upadhaya**
Class : XII Commerce

Do you Know

1. The word “Set” has more definition than any other word in the english language.
2. The longest one syllable word in the english language is “Screeched”
3. The only 15 letter word that can be spelled without repeating a letter is “Un copy rightable”
4. There are only four words in English language which end in “dous” -

   Tremendous, Horrendous, Stupendous, Hazardous
5. The dot over the letter “i” is called a tittle
6. Americans and Europeans spend US$ 17 Billion per year on food for their pets
7. There are over 7 million millionaires all across the Globe.

Name : **Mayank Gaur**
Class : XII Commerce

Poem - "Failure"

Failure doesn't mean - you are a failure.
It means - you have not succeeded.
Failure doesn't mean - you accomplished nothing.
It means - you have learned something.
Failure doesn't mean that you have been fool
It means - you have to do something in different way.
Failure doesn't mean - you are inferior
It means - you have a reason to start life.
Failure doesn't mean - You've wasted your life.
It means - you have a reason to start life.
Failure doesn't mean - God has abandoned you.
It means - God has a better way for you.

Manish Singh
XII B

Save Trees - They will save you

SAVE TREES is not just a slogan to speak or to listen, it is a persona, which should be followed by all of us to save the existence of the nature for ourselves and for the upcoming generation.

In Today's world when everyone is after another trees are the only part of nature who live for the benefits of others. There is not useful and let it be cut down. A trees has no single part of it self which is not useful with its beautiful foliage, fragrant flowers, cool shadows, roots, barks, etc. Everyone on this planet is dependent on these trees in any mean.

Name : **Pankaj Kumar**
Class : XI Commerce

7 Wonders of Life

Mothers

The First person to Welcome you in this world

Fathers

The First person to go through all the hardships just to see you smile

Sibling

The First person to teach you the art of sharing & caring

Friends

The First person to teach you how to respect people with different opinions & viewprints

Life Partner

The First person to make you realize the value of sacrifice and compromise

Your Children

The First ones to teach you how to be selfless and think about others before yourself

Your Grand Children

The First ones who make you want to live the life, all over again...

कमा के इतनी दौलत भी
मैं अपनी ''माँ'' को दे ना पाया,
कि जितने सिक्को से ''माँ''
मेरी नजर उतार कर फैक दिया करती थी...

तजुर्बो ने शैरो को खामोश रहना सिखाया
क्योंकि दहाड़कर शिकार नहीं किया जाता
कुत्ते भौंकते है
अपने जिन्दा होने का एहसास दिलाने के लिए
मगर जंगल का सन्नाटा,
शेर की मौजूदगी बयां करता है।

Name : **Raghav Babbar**

National Players (K.V.S.)

Princess Sanskriti Jakhoria
(Badminton) U-17
IXth ‘B’

Shivani Kuamri
(Skating) U-17
IXth ‘B’

Sandhya Meena
(Discuss) U-14
VIIIth ‘B’

Tarasha Gori
(Skating) U-14
VIth ‘B’

Jyoti Kumari
(Discuss) U-17
Xth ‘B’

मानव अपना भाग्य निर्माता

मुहम्मद एक अच्छे आदमी हो गये है या बुद्ध भले थे इससे मुझे क्या मतलब?इसमें क्या मेरे अपने भलेपन में या बुरेपन में कोई अन्तर पड़ जायगा? हमें अपने लिए ही अपनी जिम्मेदारी पर भला होना चाहिए। और यह इसलिए नहीं कि पीछे कहीं, कभी कोई अच्छा हो चुका है।

अपनी वर्तमान अवस्था के जिम्मेदार हम ही हैं और जो कुछ हम होना चाहे, उसकी शक्ति भी हम ही हैं। यदि हमारी वर्तमान अवस्था हमारे ही पूर्व कर्मों का फल है वह हमारे वर्तमान कार्यों द्वारा ही निर्धारित किया जा सकता है। अतएव हमें यह जान लेना आवश्यक है कि किस प्रकार किये जाएँ। सब प्रकार के शरीरों में मानव–देह ही श्रेष्ठतम है, मनुष्य ही मनुष्य का श्रेष्ठतम जीव है। मनुष्य सब प्रकार के निष्कृट जीव और कोई नहीं।

'मनुष्य तभी तक मनुष्य कहा जा सकता है, जब तक वह प्रकति दोनों है और जब हम विश्व–इतिहास का मनन करते है तो पाते है कि जब किसी राष्ट्र में ऐसे लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है, तब सब उस राष्ट्र का अभ्युदय हुआ है तथा जब भूमा या असीम उसे उपयोगितावादी जो भी कहें कि खोज समाप्त हो जाती है तो उस राष्ट्र का पतन होने लगता है। तात्पर्य यह है कि आध्यात्मिकता ही किसी भी जाति कि शक्ति का प्रधान स्त्रोत है। जिस दिन से इसका हास और भौतिकता का उत्थान होने लगता है, उसी दिन से राष्ट्र की मृत्यु प्रारम्भ हो जाती है।

–स्वामी विवेकानन्द

खुशी अखण्ड
कक्षा–10 'ब'

श्रद्धा और बल

जिसमें आत्मविश्वास नहीं है वही नास्तिक है। प्राचीन धर्मों में कहा गया है, जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता वह नास्तिक है। नूतन धर्म कहता है, जो आत्मविश्वास नहीं रखता वही नास्तिक है।

संसार का इतिहास उन थोड़े से व्यक्तियों का इतिहास है, जिनमें आत्मविश्वास था। यह विश्वास अन्तः स्थित देवत्व को ललकार कर प्रकट कर देता हे। तब व्यक्ति कुछ भी कर सकता है, सर्व समर्थ हो जाता है। असफलता तभी होती है, सर्व समर्थ हो जाता है। असफलता तभी होती है, जब तुम अन्तः स्थ अमोध शक्ति को अभिव्यक्त करने का यथेष्ट प्रयत्न नहीं करते। जिस क्षण व्यक्ति या राष्ट्र आत्मविश्वास खो देता है, उसी क्षण उसकी मृत्यु आ जाती है।

विश्वास–विश्वास अपने आप पर विश्वास, परमात्मा के ऊपर विश्वास–यही उन्नति करने का एकमात्र उपाय है। यदि पुराणों में कहे गये तैंतीस करोड़ देवताओं को तुम्हारे बीच घुसा दिया है, उन सब पर भी तुम्हारा विश्वास हो और अपने आप पर विश्वास न हो, तो तुम कदापि मोक्ष के अधिकारी नहीं हो सकते।

यह कभी न सोचना कि आत्मा भयानक नास्तिकता है। यदि पाप नामक कोई वस्तु है तो यह कहना ही एकमात्र पाप है कि मैं दुर्बल हूँ अथवा अन्य कोई दुर्बल है।

तुम जो कुछ सोचोगे, तुम वही हो जाओगे, यदि तुम अपने को दुर्बल समझोगे, तो तुम दुर्बल हो जाओगे, बलवान सोचोगे तो बलवान बन जाओंगे। मुक्त होओ, किसी दूसरे के पास से कुछ न चाहो। मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि यदि तुम अपने जीवन की अतीत घटनाएँ याद करो तो देखोगे कि तुम सदैव व्यर्थ ही दूसरों से सहायता पाने की चेष्टा करते रहे, किन्तु कभी पा नहीं सके जो कुछ सहायता पायी हैं, वह अपने अन्दर से ही थी।

–स्वामी विवेकानन्द

खुशी मालव
कक्षा–10 'ब'

हिंदू हिंदी, हिंदोस्तान

अपने धर्म, देश भाषा की, जो इज़्ज़त करते हैं,
धर्म देश और भाषा प्रेमी, सब उनको कहते हैं।

हिंदू, हिंदी, हिंदोस्तान, ये पहचान है मेरी,
तीनों ही मुझमें रहते हैं, तीनों जान हैं मेरी,
जहाँ भी रहता हूँ ये मेरे, साथ–साथ रहते हैं।

अपनी सभ्यता, संस्कृति से, मैंने वो पाया है,
इस धरती से, उस अंबर तक, जो सबसे प्यारा है,

जिसको पाने की कोशिश में, सारे ही मरते हैं।

भारत कह लो, इंडिया कह लो, या फिर हिंदोस्तान,
मेरी आँखें उसी तरफ़ हैं, उसी तरफ़ है ध्यान,
तन से रूह, उसके गुण गाते, उसमें ही बसते हैं।

अक्षत सिंह
कक्षा–11 कॉमर्स

पापा........

पापा के लिए लिखना चाहता हूँ एक कविता
जिसे पढ़कर वो मेरे मन को पढ़ लें।
लेकिन मैं कोई कवि नहीं हूँ
जो कुछ कहकर वो बहुत कुछ समझ लें।
आज तक मैंने उनका कोई सपना पूरा नहीं किया
लेकिन वो मुझसे आज भी कहते हैं कि
तू अपना हर सपना पूरा कर ले।
मैंने उनकी हर खुशियों पर पानी फेरा हैं
लेकिन वो मुझसे आज भी कहते हैं
तू अपनी हर खुशियों को पूरा कर ले।
अब तो आपसे मैं ये भी नहीं कह सकता
कि मैं आपका हर सपना पूरा करूँगा।
अब तो आप जहाँ बोलेंगे वही चलूँगा,
ये कहने का अधिकार मैंने खुद ही खो दिया
आपके सपनों पर मैंने खुद ही पानी फेर दिया
मैंने कभी माफी भी नहीं माँगी फिर भी
आपने बिना कहे मुझे माफ कर दिया,
मैं यकीन दिलाता हूँ मैं आपके कहे रास्ते पर चलूँगा।
जो रास्ता आपने मेरे लिए चुना है
मैं उसी रास्ते पर चलूँगा।
और वहाँ पहुँचकर मैं आपका
हमेशा शुक्र अदा करूँगा.....

ऋषि पाल सिंह
कक्षा–10 'ब'

शिक्षा एवं समाज

शिक्षा का अर्थ है उस पूर्णता को व्यक्त करना जो सब मनुष्यों में पहले से विद्यमान है। शिक्षा क्या है ? क्या वह पुस्तक–विद्या है ? नहीं क्या वह नाना प्रकार का ज्ञान है ? नहीं, यह भी नहीं। जिस संयम के द्वारा इच्छाशक्ति का प्रवाह और विकास वश में लाया जाता है और वह फलदायक होता है, वह शिक्षा कहलाती है। मेरे विचार से तो शिक्षा का सार मन की एकाग्रता प्राप्त करना है, तथ्यों का संकलन नहीं। यदि मुझे फिर से अपनी शिक्षा आरम्भ करनी हो और इसमें मेरा वश चले, तो मैं तथ्यों का अध्ययन कदापि न करूँ। मैं मन की एकाग्रता और अनासक्ति का सामर्थ्य बढ़ाता और उपकरण के पूर्णतया तैयार होने पर उससे इच्छानुसार तथ्यों का संकलन करता।

जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन–संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्र–बल, परहित–भावना तथा सिंह के साहस नहीं ला सकती, वह भी कोई शिक्षा है ? जिस शिक्षा के द्वारा जीवन में अपने पैरों पर खड़ा हुआ जाता है, वही है शिक्षा।

शिक्षा का मतलब यह नहीं कि तुम्हारे दिमाग में ऐसी बहुत सी बाते इस तरह ठूँस दी जाये, जो आपस में लड़ने लगे और तुम्हारा दिमाग उन्हें जीवन भर में हजम न कर सके। जिस शिक्षा से हम अपना जीवन–निर्माण कर सकें। मनुष्य बन सके, चरित्रगठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सके, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है। यदि तुम पाँच ही भावों को हजम कर तदनुसार जीवन और चरित्र गठित कर सके हो तो तुम्हारी शिक्षा उस आदमी की अपेक्षा बहुत अधिक हैं, जिसने एक पूरी की पूरी लाइब्रेरी ही कण्ठस्थ कर ली है।

तानिया जैन
कक्षा–11 'कॉमर्स'

भारत देश

क्या भारत मर जाएगा ? तब तो संसार से सारी आध्यात्मिकता का समूल नाश हो जाएगा, सारे सदाचारपूर्ण आदर्श जीवन का विनाश हो जाएगा, धर्मों के प्रति सारी मधुर सहानुभूति नष्ट हो जाएगी, सारे ध्येयवाद का भी लोप हो जाएगा। और उसके स्थान में कामरूपी देव और विलासितारूपी देवी राज्य करेगी। धन उनका पुरोहित होगा। प्रतारणा पाशविक बल और प्रतिद्वन्द्विता ये ही उनकी पूजा–पद्धति होगी और मानव–आत्मा उनकी बलि सामग्री हो जाएगी। ऐसी दुर्घटना कभी हो नहीं सकती। क्या व कभी मर जाएगा ? वह भारत जो प्राचीन काल से सभी उदात्तता, नीति और आध्यात्मिकता का जन्मस्थान रहा है, वह देश जिसमें ऋषिगण विचरण करते रहे है, जिस भूमि में देवतुल्य मनुष्य अब भी जीवित और जाग्रत है, क्या मर जाएगा ? भाइयों। मैं उस यूनानी ऋषि कायोजीनिस की लालटेन का उधार लेकर आपके पीछे पीछे इस विशाल संसार के शहरों, ग्रामों, मैदानों और जंगलों में चल दूँगा–मुझे अगर आप दिखा सकते हो तो ऐसे पुरूष दूसरे देशों में भी दिखा दीजिए।

संसार हमारी भारतमाता का बहुत ही ऋणी है। यदि भिन्न–2 जातियों की पारस्परिक तुलना की जाय तो मालूम होगा कि सारा संसार सहिष्णु एवं 'निरिह' हिन्दू का जितना ऋणी है, उतना और किसी का नहीं.....जब ग्रीस का अस्तित्व नहीं था, रोम भविष्य के अंधकारगर्भ में छिपा हुआ था, जब आधुनिक यूरोपियनों के पुरखे जर्मनी के घने जंगलों के अंदर छिपे रहते थे और जंगली लोगों की तरह अपने शरीर को नीले रंग से रंगा करते थे, तब भी भारतवासी कितने क्रियाशील थे, इस बात की गवाही हमें इतिहास दे रहा है। उससे भी पहले, जिस समय की कोई स्थिति इतिहास नहीं बता सकता जिस सुदूर अतीत की और नज़र दौड़ने का साहस किम्वदंती को भी नहीं होता, उस अत्यंत प्राचीन काल से लेकर अब तक न जाने कितनी ही भाव तरंगे भारत से प्रसूत हुई हैं पर वे सब तरंगे अपने आगे शांति तथा पीछे आशीर्वाद लेकर अग्रसर हुई है।

विजया
कक्षा–11 'कॉमर्स'

कविता-दिवाली

जगमग दीपों की माला ले,
आई दिवाली, आई दिवाली।
अँधियारे को दूर भगाने,
आई दिवाली, आई दिवाली
रंग बिरंगे कपड़े पहने,
बच्चे, बूढ़े सब हर्षाते।
लड्डू, पेड़े, बरफ़ी खाते,
खीर , बताशे सबको भाते।
लक्ष्मी जी की पूजा करते,
और पटाखे खूब जलाते।
जगमग-जगमग करें फुलझड़ियाँ,
मानो जमीन पर तारे लाते।

वर्षा मीना
कक्षा-4 'ब'

पानी शुद्ध करने की घरेलू तथा सस्ती तकनीक

राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (एन.एम.एल.) जमशेदपुर ने पानी शुद्ध करने की ऐसी घरेलू तकनीक विकसित की है जिसके जरिए तीन से पांच पैसे में एक लीटर शुद्ध पेयजल प्राप्त किया जा सकता है। तकनीक की खासियत यह है कि पानी शुद्ध करने के लिए बिजली की जरूरत नहीं होगी और शुद्धता प्यूरिफायर के समान। काउंसिल ऑ साइंटिफिक एण्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सी.एस.आई.आर) के अंतर्गत एन.एम.एल. की वैज्ञानिक डॉ. संचिता चक्रवर्ती और डॉ. शांतनु भट्टाचार्य ने 6 साल की मेहनत के बाद इस तकनीक को विकसित किया। डॉ. संचिता के अनुसार एक बार मात्र 600 रूपये खर्च कर पीने के शुद्ध पानी का इंतजाम किया जा सकता है। झारखंड, ओडिसा, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल सहित उन राज्यों के लिए यह तकनीक बेहद लाभकारी है, जहां पानी में आर्सेनिक समेत विभिन्न खनिज-मात्रा पाई जाती है। गरीब और ग्रामीण इस तकनीक को आसानी से अपना सकेंगे। तकनीक का सफल परीक्षण हो चुका है।

देवेन्द्र सिंह खुशवाह
कक्षा-11 'कॉमर्स'

मुस्कुराहट

❊ एक हवाई जहाज तूफान में फंस गया। मोनू उसका कप्तान था।

मोनू (यात्रियों से) किसी को तूफान से बचने की दुआ आती है ?

❊ एक बाबा खुश होकर बोले, आती है।

मोनू ठीक है, तुम अपने लिए दुआ करो, क्योंकि एक पैराशूट कम है।

❊ **आज का ज्ञान** अगर आपके पापों का घड़ा भर जाए तो......
घड़ा हटा कर बाल्टी रख देनी चाहिए !!!

❊ **रमन** कौन सी चीज़ फ्रीज में रखने के बाद भी गर्म रहती है ?

चमन गरम मसाला....कसम से जीनियस हूँ, पर कभी घमंड नहीं किया।

❊ **सास** कितनी बार कहा है, बाहर जाओ तो बिंदी लगाकर जाया करो।

बहू जींस पर कौन बिंदी लगाता है ?

सास मैंने कब जींस पर लगाने को कहा ? माथे पर लगाओ, माथे पर !

पिता भी कई बार झूठ बोलते थे.....

❊ जब वे काम से थककर घर लौटे थे फिर भी आपको साइकल चलाना सिखाने के लिए तैयार थे।

❊ जब उनका पर्स खाली था तब भी आपको पसंद की वस्तु दिला ही दी होगी।

❊ जब उनको भूख लग रही थी पर पहले आपको खिलाया था।

❊ जब आपको नए कपड़े दिलाने ले गए, पर खुद नहीं लिए। कहा-तुम बढ़ रहे हो, तुम्हारे कपड़े छोटे हो जाते है, मेरे पास तो बहुत हैं।

कीर्ति राघव
कक्षा-12 'साइंस'

बारहवीं तक का सफर (बैच 2016–17)

स्कूल का पहला दिन याद हो ना हो,
आखिरी जरूर याद आएगा।
क्योंकि इस दिन ना जाने क्यों,
ये मस्ती भरा सिलसिला खत्म हो जाएगा।।
याद आती है आज भी नर्सरी की वो मस्ती,

कचौड़ी भी जब केन्टिन में मिला करती थी सस्ती।
मालव सर ही थे वो बच्चों के जाने माने हस्ती,
जिन्होंने सिखाया 8–0 होता है अस्सी।।
वो पहली के मजे हम कैसे भूल जाएँ,
कौर मैम ने ही हमे के A B C गुर सिखाए।
दूसरी में आते ही दिमाग ने मारा ऐसा जोर,
छुट्टी होते ही हम खाते थे झण्डा और बोर।।

तीसरी में आते ही हम भूल गए क्या आलू क्या है टमाटर,
नया–नया शौक था इसलिए भागते थे चलाने कम्प्यूटर।
प्रजापति सर हुआ करते थे बड़े दिलदार,
हर बात पे खुश हो कर दिया करते थे ए स्टार।।

अनुराधा मैम थी एक ऐसी Teacher,
Simplicity था जिनका Feature
अब आ गई पाँचवीं की बारी,
जिसमें पीछे रह गई पेंसिल हमारी।।

छठी में आ गया छठी का दूध याद,
फैल हो जाएँगे अब इसके बाद।
मनोज सर के आते ही खेल में हो गए सब मस्त,
विज्ञान में उर्मिला मैम ने सिखाया क्यों होता है सूर्य अस्त।।

CCE Pattern ने मार दिया अब जोर,
CGPA की आड़ में होती थी हमारी भोर।
नवीं में हमें विपुल सर ने संभाल लिया,
नागर सर ने जहाँ को रंगों से सजा दिया।
मेघना मैम को करते हैं आज भी याद हम,
पनिशमेंट में सुनील सर ने हमें नीचे नहीं बैठाया है कम।।

दसवीं में आते ही बोर्ड ने ऐसा खौफ जमाया,
'Run for Unity' ने हमें खूब भगाया।
गुप्ता सर ने फार्मूलों को बहुत रटवाया।।
ग्यारहवीं में हो गए जुदा जो बचपन से साथ थे,
छूट गए वो F.A. भी जिन पर Marks देने वालों के हाथ थे।
रावत सर भी छोड़ गए ये K.V. 2 का साथ शो।।

Projects उफ्फ...?

आखिर Teachers की डाँट ने हमें यहाँ तक पहुँचा दिया,
हमारी मेहनत ने हमें Seniors का हक दिलवा दिया।।

दूबे सर और गौतम सर ने हमें बारहवीं में संभाल लिया,
रामचन्द्र सर ने अंग्रेजी से मुखातिब करवा दिया,
और जाटव सर ने तो ऐसी कविता लिखने का गुर सिखला दिया।।

यादों का सिलसिला यूँ ही चलता जाएगा,
आज हम हैं कल आपका वक्त आएगा।
कैसे भूल जाएँ उन यादों को जो जीना सिखाएगा,
दोस्ती का वो पल हमें कल बहुत रूलाएगा,
देखते हैं क्या आने वाला पल हमें ऐसी जन्नत पे पहुँचा पाएगा।।

मेघा मीणा
कक्षा–12 'विज्ञान'

चॉकलेटी है चॉकलेट की दुनिया

❊ **चॉकलेट प्रेमी यूरोपियन :–** यूँ तो दुनियाँ के हर देश में चॉकलेट खाने के शौकीन होते है, लेकिन यूरोप के लोग इसके कुछ ज्यादा ही दीवाने हैं। इंटरनेशनल कोको ऑर्गेनाइजेशन की माने तो दुनियाँ की आधी चॉकलेट सिर्फ यूरोपियन खा जाते हैं। इसके मुताबिक एक ब्रिटिश, स्विस या जर्मन नागरिक साल में लगभग 11 किलो चॉकलेट खा लेता है।

❊ **5 हजार किलो की चॉकलेट :–** ब्रिटेन की चॉकलेट कंपनी थॉर्न टॉन्स ने अपनी स्थापना की शत वार्षिकी पर (2011) में कुछ खास रूप में मनाने के लिए दुनियाँ की सबसे बड़ी चॉकलेट बना डाली। इस चॉकलेट का वजन 5792.50 किलोग्राम था।

❊ **चॉकलेट की नदी :–** सन् 1971 में एक फिल्म 'विली वोनका एण्ड चॉकलेट फैक्ट्री' की शूटिंग के लिए चॉकलेट की नदी बना दी गई। इसके लिए 15 हजार गैलन पानी में चॉकलेट और क्रीम को मिलाया गया।

❊ **चॉकलेट का इंटीरियर :–** सन् 2013 में एलीना क्लीमेंट ने एक ऐसा अनूठा घर बनाया, जिसमें मौजूद हर चीज चॉकलेट से बनी हुई थी। छह सौ किलो चॉकलेट की मदद से बने इस 20 वर्ग मीटर के कमरे में टेबल, कुर्सी, ड्रॉअर, फायरप्लेस, फ्लावर पॉट आदि सब कुछ चॉकलेट का था। इसे बनाने में ढाई महीने लगे। बाद में बेलारूस के मिस्क में इसे सामान ग्राहकों को चखाया गया।

❊ **एनर्जी ड्रिंक कोकाआ :–** चॉकलेट की शुरूआत अमरीका में मानी जाती है। ईसा से 1900 साल पहले यहाँ के वाशिंदे कोकोआ सीड्स को 'गॉड गिफ्ट' मानते थे। वे इसे एक तीखे एनर्जी ड्रिंक की तरह मसालों, कॉर्नसूप और वाइन के साथ भी इस्तेमाल करते थे।

❊ **पैसों के रूप में चॉकलेट :–** मामा सभ्यता में लोग कोकोआ बीन्स को करेंसी के रूप में इस्तेमाल करते थे। कहते हैं, उन दिनों इसकी कीमत सोने से भी ज्यादा थी। कारण था कि कोकोआ की खेती पर प्रतिबंध था और यह आसानी से उपलब्ध नहीं था।

❊ **फास्ट फूड की तरह चॉकलेट :–** सोलहवीं सदी में इसे चीनी के साथ मिलाकर इस्तेमाल किया गया। यूरोप में यह बेहद लोकप्रिय होने लगा। बीसवीं सदी में अमरीकी सैनिक युद्ध के मैदान में फास्ट फूड की तरह इसका इस्तेमाल करने लगे। दुनियाँ भर में उपजने वाले कोकोआ का 66 फीसदी हिस्सा पश्चिमी अफ्रीका में उपजता है। अकेले आइवरी फॉस्ट में पूरी दुनियाँ के 33.34 फीसदी कोकोआ का उत्पादन होता है।

❊ **गलती से बनी चॉकलेट चिप कुकी :–** सन् 1930 में चर्चित बेकर रूथ वेकफील्ड के पास अचानक बेकिंग में काम आने वाली चॉकलेट खत्म हो गई। उन्होंने खाने वाली नेस्ले चॉकलेट को कुकीज के मिश्रण में मिला दिया और सोचा कि यह गलकर मिश्रण में मिल जाएगी और चॉकलेट कुकीज तैयार हो जाएगी। लेकिन कुकीज बनकर तैयार हुई तो उन्हें जगह–जगह चॉकलेट के छोटे–छोटे टुकड़े नजर आने लगे, जिन्हें उन्होंने कुकीज विद् चॉकलेट चिप्स का नाम दिया यह कुकीज देखने और खाने में बहुत अच्छी थी। इसलिए यह प्रयोग उन्होंने आगे भी जारी रखा। बाद में उन्होंने अपना यह आयडिया नेस्ले कंपनी को बेच दिया, जिसके बदले में उन्हें आजीवन चॉकलेट सप्लाई करने का वादा किया।

प्रियंका कुमारी
कक्षा–12 'विज्ञान'

वादा

फूल सी खुशबू लिए,
बच्चों की–सी मासूमियत है जिसमें,
निशाना हम जिसे हमेशा चाहते,
लेकिन शायद कभी ना निभा पाते।
वादा तो दो इंसानों को जोड़ता है,
वादे से तो बहुत कुछ बदलता है।
वादा तो गुलशन का वो फूल होता है,
जो पतझड़ में भी खिलता है।
वादा तो जहन्नूम को भी जन्नत बना देता है,
जिंदगी में हजारों बहार ला देता है।
वादा हो जाए अगर पूरा तो,
खुशी बहुत होती है।
लेकिन शायद आज के इस युग में
हम भूल गए हैं वादे को,
पहले वादा निभाने के लिए था
अब तोड़ने के लिए रह गया
निभाना हम उसे जैसे भूल गए,
स्वर्णिम अक्षरों में जब
रचा इतिहास गया था, तो
रवि की आभा लिए लिखा यह भी गया कि–
''रघुकुल रीत सदा चली आई,
प्राण जाए पर वचन जाए।''
लेकिन हम सब यह कहाँ करते हैं।
वादा कर अपनी ज़ुबान से पलटते हैं।
वादे की अहमियत हम कहाँ समझते हैं।
समझ तो हम उस दिन पाऐंगे
जब हम खुद पछताएँगें,
जब हम से कोई वादा कर मुकर जाएगा,
शायद कहीं उस दिन जाकर हमें
अपने किए पर गुस्सा आएगा।
और शायद हम तब जाकर यह जान पाएँगे
कि वादा तो वो बंधन होता है
जिससे दो शख्स जुड़े रहते हैं।
तब कहीं जाकर हम उसकी खूबसूरती को पहचान पाएँगे,
और शायद तब ही हम,
इतिहास फिर से दोहरा पाएँगे।

ममतेश बघेल
कक्षा–12 'विज्ञान वर्ग' (स्वयं रचित)

संस्कृत के ज्ञाता (कालिदास)

कालिदास संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटकार थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्व निरूपित हैं। कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें राष्ट्रीय कवि का स्थान तक देते हैं।

अभिज्ञान शाकुंतलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना हैं। मेघदूतम् कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना हैं। कालिदास के जन्म स्थान के बारे में भी विवाद है। मेघदूतम् में उज्जैन के प्रति उनके विशेष प्रेम को देखते हुए कुछ लोग उन्हें उज्जैन का निवासी मानते हैं। साहित्यकारों ने ये भी सिद्ध करने का प्रयास किया हैं कि कालिदास का जन्म उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग जिले के कविल्हा ग्राम में हुआ था। कालिदास की शादी विद्योत्तमा नाम की राजकुमारी से हुई। ऐसा कहा जाता है कि विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा वह उसी से शादी करेगी। जब विद्योत्तमा ने शास्त्रार्थ में सभी विद्वानों को हरा दिया तो अपमान से दु:खी कुछ विद्वानों ने कालिदास से उसका शास्त्रार्थ कराया। विद्योत्तमा मौन शब्दावली में गूढ़ प्रश्न पूछती थी। जिसे कालिदास अपनी बुद्धि से मौन संकेतों से ही जवाब दे देते थे। विद्योत्तमा को लगता था कि कालिदास गूढ़ प्रश्नों का जवाब दे रहे हैं। उदाहरण के लिए विद्योत्तमा ने प्रश्न के रूप में खुला हाथ दिखाया तो कालिदास को लगा कि यह थप्पड़ से मारने की धमकी दे रही हैं। उसके कारण कालिदास ने घूंसा दिखाया तो विद्योत्तमा का लगा कि वह कह रहा है कि पांचों इन्द्रियाँ भले ही अलग हो सभी एक मन के द्वारा संचालित हैं। विद्योत्तमा और कालिदास का विवाह हो गया तब विद्योत्तमा को सच्चाई का पता चला की कालिदास अनपढ़ हैं उसने कालिदास को धिक्कारा और यह कह कर घर से निकाल दिया कि सच्चे पंडित बने बिना घर वापिस नहीं आना। कालिदास ने सच्चे मन से काली देवी की आराधना की और उनके आशीर्वाद से वे ज्ञानी और धनवान बन गए। ज्ञान प्राप्ति के बाद जब वे घर लौटे तो उन्होंने दरवाजा खड़का कर कहा 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेष कालिदासः', विद्योत्तमा को लगा कोई ज्ञानी आया है। फिर कालिदास ने विद्योत्तमा को अपना पथप्रदर्शक गुरू माना और उसके इस वाक्य को उन्होंने अपने काव्यों में जगह दी।

दिव्या
कक्षा–8 'ब'

बेटी

माँ तेरा चेहरा क्यों कुम्हलाया है।
मेरा आना तुझे क्यों नहीं भाया है।
माँ बेटे ही सबको क्यों भाते है,
क्या वे अपने साथ कुछ लेकर आते है ?
बेटी तो बेटे जैसी किस्मत लाती है,
वह तो दोनों परिवार निभाती है,
सब कुछ खुशी–खुशी
सह लेती है,
घर व दफ्तर का बोझ
उठा लेती है।
बेटे के लिए बहू कहाँ से लाओगी ?
एक से चार के ब्याह रचाओगी ?
माँ तेरा चेहरा क्यों कुम्हलाया है,
बेटी तो तुम्हारी ही छाया है,
तुझे मेरा आना गोद में उठा लेना
प्यार से गले लगा लेना
मुझ पर भी दया दृष्टि बना देना।

खुशी अखण्ड
कक्षा–10 'ब'

ये बेटियाँ

ओस की बूँद सी होती है, बेटियाँ,
पापा की प्यारी व दादा की दुलारी होती है बेटियाँ,
हीरा अगर है बेटा, तो सच्चा मोती है बेटियाँ,
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को,
दो–दो कुलों की लाज होती है बेटियाँ।

काँटों की राह पर चलती हैं बेटियाँ,
औरों की राहों में फूल बनती हैं बेटियाँ,
माँ–बाप के दर्द में हमदर्द होती हैं बेटियाँ,
कहने को पराई अमानत है पर,
बेटों से बढ़कर होती है बेटियाँ।।

बेटा है आँख तो पलक है बेटियाँ,
जीवन का सारांश है बेटियाँ,
बेटी धन पराया होता है
यह मैं सुनती आई हूँ।
दर्द विदाई का क्या होता है
आज समझ पाई हूँ।।

शैलजा मीणा
कक्षा–7 'ब'

बेटी

कहती बेटी बाँह पसार
मुझे चाहिए प्यार दुलार

बेटी की अनदेखी क्यूँ
करता है निष्ठुर संसार

सोचो जरा हमारे बिन
बसा सकोगे घर परिवार

गर्भ से यौवन तक मुझ पर
लटक रही तलवार

मेरी व्यथा वेदना का
अब हो स्थाई उपचार

मानसी शर्मा
कक्षा–6 'अ'

कोटा की शान

देखो कोटा में वो बरसात की शाम,
वो दशहरे मेले का जाम।
वो चम्बल गार्डन की हवा,
वो एम.बी.एस. अस्पताल की दवा।
वो सिटी मॉल की शॉपिंग,
वो दोस्तों से मोबाईल पर टॉकिंग।
वो आई.आई.टी. की पढ़ाई,
वो पानी पूरी की खटाई।
वो अमर ढ़ाबे का खाना,
जिसका सारा जहाँ है दिवाना।
वो सोयाबिन का तेल,
वो के.वी. 2 की पढ़ाई और खेल।
वो गोदावरी धाम की सड़के,
जहाँ अनेक दिल धड़के।
वो कोटा डोरिया की साड़ियाँ,
वो चम्बल की बहती नदियाँ।
वो एल.जी का गुलकन्द,
वो किशोर सागर का तट।
वो मस्ती की राते,
ऐसी है कुछ कोटा की बाते।

दिक्षा मिश्रा
कक्षा–10 'ब'

अनमोल वचन

वो खुद ही तय करते हैं मंजिल आसमानों की
परिंदो को नहीं दी जाती तालीम उड़ानों की
रखते है जो हौंसला आसमाँ छूने का
उनको नहीं परवाह कभी गिर जाने की !

आभा सिंह
कक्षा–7 'ब'

वह चिड़िया जो

वह चिड़िया जो चोंच मारकर
दुध–भरे चुड़ी के दाने
रूचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखो वाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है

वह चिड़िया जो कंठ खोलकर
बूढ़े वन बाबा के खातिर
रस उडेरकर लेती है।
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीलें पंखों वाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है

वह चिड़िया जो चोंच मारकर
चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है
वह छोती गरबीली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

संकलन कर्ता
अंकित कुमार
कक्षा–6 'अ'

प्यारा बचपन

एक बचपन का जमाना था,
जिस में खुशियों का खजाना था...

चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दिवाना था...

खबर ना थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था...

थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था...

परियों का फसाना था...
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था...

आभा सिंह
कक्षा–7 'ब'

विशेष पहेली

किस कान से नहीं सुनते है ?	(मुस्कान)
किस ड्रेस को पहना नहीं जाता ?	(एड्रेस को)
किस चना का पेड़ नहीं होता ?	(सूचना)
किस वन में पेड़ नहीं होता ?	(जीवन)
किस यार से मजाक नहीं करते ?	(हथियार)
कौन–सा खाना नहीं खाया जाता	(कारखाना)

प्रेरक बिन्दु

पीने के लिए कोई चीज है तो :–	क्रोध
खाने के लिए कोई चीज है तो :–	गम
लेने के लिए कोई चीज है तो :–	ज्ञान
देने के लिए कोई चीज है तो :–	दान
जीतने के लिए कोई चीज है तो :–	मन
त्यागने के लिए कोई चीज है तो :–	ईर्ष्या

क्या व्यर्थ है

गुण – ना हो तो रूप व्यर्थ है।
होश – ना हो तो जोश व्यर्थ है।
उपयोग – ना हो तो धन व्यर्थ है।
साहस – ना हो तो हथियार व्यर्थ है।
विनम्रता – ना हो तो विद्या व्यर्थ है।
लज्जा – ना हो तो सुन्दरता व्यर्थ है।
परोपकार – ना करने वालों का जीवन व्यर्थ है।

माँ

माँ दु:ख में सुख का एहसास है, हर पल मेरे आस–पास है।
घर की आत्मा है, साक्षात् परमात्मा है।
आरती, अजान है, गीता और कुरान है।
तपती धूप में साया है, आदि शक्ति महामाया है।
जीवन में प्रकाश है, निराशा में आशा है।
महीनों में सावन है, गंगा सी पावन है।
देवियों में गायत्री है, मनुज देह में सावित्री है।
ईश वंदना का गायन है, चलती फिरती रामायण है।
रत्नों की माला है, अंधेरे में उजाला है।
वंदन और बोली है, रक्षा सूत्र की मौली है।
ममता का प्याला है, शीत में दुशाला है।
गुड़ सी मीठी बोली है। ईद, दिवाली, होली है।
इस जहाँ में हमें लाई है।
''अन्त में मैं बस ये एक पुण्य का काम करती हूँ।
दुनिया की सभी माँ को दण्डवत् प्रणाम करती हूँ।''

हिन्दी दिवस

कल रात हिन्दी मेरे सपनों में आई थी
उसके मुखमंडल पर गहरी उदासी छाई थी
मैंने पूछा हिन्दी से
इतनी गुमसुम हो कैसे ?
अब तो हिन्दी दिवस है आना
सम्मान तुम्हें सबसे है पाना
हिन्दी बोली यही गिला है
वर्ष का इक दिन मुझे मिला है
अपने देश में मैं पराई हूँ
ऐसा मान न चाहूँ भाई
मेरे बच्चे मुझे न जाने
लोहा अंग्रेजी का माने
सीखे लोग यहाँ जापानी
पर मैं हूँ यहाँ अनजानी
हिन्दी की ये बात सुनी जब
ग्लानि से भर उठी मैं तब
सोचा माँ की पीर बंटा दूँ
जन–जन तक हिन्दी पहुँचा दूँ।

नेहा चाहर
कक्षा–8 'ब'

बूझो तो जाने (पहेलियाँ)

1. काली है पर काग नहीं
   लम्बी है पर नाग नहीं
   बल खाती है डोर नहीं
   बाँधते है पर डोरी नहीं।
2. अपनो के घर ही ये जाए
   तीन अक्षर का नाम बताएँ
   शुरू के दो अति हो जाए
   अंतिम दो से तिथि बताएँ।
3. बीमार नहीं रहती
   फिर भी खाती है गोली
   बच्चे बूढ़े डर जाते
   सुन इसकी बोली।
4. काला मुँह लाल शरीर
   कागज को वो खाता
   रोज शाम को पेट फाड़कर
   कोई उन्हें ले जाता।
5. साँपों से भरी एक पिटारी
   सब के मुँह में दी चिंगारी
   जोड़ो हाथ तो निकल घर से
   फिर घर पर सिर दे पटके।

उत्तर– 1. चोटी 2. अतिथि 3. बंदूक
4. लेटर बॉक्स 5. माचिस

कर्मवीर
कक्षा–10 'ब'

1. छोटा सा फकीर
   पेट में लकीर।

2. वो क्या है
   जो कहने भर में टूट जाती है।

3. वो क्या है
   जो गीता में नहीं।

4. वह क्या जो दिखने में
   छोटा कहलाता बड़ा।

5. शंकर की माँ के तीन बेटे
   एक का नाम था सोम
   दूसरे का मंगल
   तीसरे का नाम क्या होगा?

उत्तर– 1. गेहूँ 2. खामोशी 3. झूठ
4. दही बड़ा 5. शंकर

हिमांशु शर्मा
कक्षा–6 'अ'

1. 108 पत्नियाँ किसकी है ?
2. दो पत्नियाँ किसकी है ?
3. गणेश जी की पत्नी का क्या नाम है ?
4. गणेश की पुत्री का क्या नाम है ?
5. ब्रह्मा जी की पत्नी का क्या नाम है ?
6. रावण की लंका कहाँ है ?
7. रावण के कितने पुत्र है ?

उत्तर– 1. कृष्ण जी 2. गणेश जी 3. रिद्धी और सिद्धी
4. संतोषी माँ 5. सरस्वती माँ 6. श्री लंका में
7. 100

देवेन्द्र सिंह
कक्षा–6 'अ'

छोटे बच्चे हम नादान

छोटे बच्चे हम नादान पूजा करते है भगवान,
फूल हमारे तुम रख लेना हम को बुद्धि दे देना।

पढ़ लिखकर हम बने महान,
आये अपनी मिट्टी के काम।।

कृष्णा मीणा
कक्षा–4 'ब'

पहेलियाँ

1. बीमार नहीं रहती,
मैं फिर भी खाती हूँ गोली
बच्चे बूढ़े सब डर जाते है,
सुनकर मेरी बोली।

उत्तर – बन्दूक

2. अगर कान पर मैं चढ़ जाऊ,
तो नाक पकड़कर तुम्हें पढ़ाऊँ,

उत्तर – चश्मा

3. नहीं बनाती कभी घोंसला,
गाती मीठे गीत
एक मात्र पक्षी है ऐसा
नहीं काग का मीत

उत्तर – कोयल

4. अंत कटे से सार है
मध्य कटे से बनता रिश्ता
आदि काट कर पीते रस
नदी से अपना बड़ा है नाता

उत्तर – सारस

5. गुटरूंगु भाई गुटरूंगु
रंग सलेटी छत पर हूँ
दाना फैंको तो मुझे
आ जाऊँगा आंगन में

उत्तर – कबूतर

6. सफेद रंग और लंबी गर्दन,
एक चरण दो ध्यान,
देखने में वह सीधा सादा,
पर निरी कपट की खान

उत्तर – बगुला

7. लाल–लाल आँखे,
लंबे–लंबे कान,
रूई का सा गोला लगे,
बोलो क्या है नाम

उत्तर – खरगोश

8. मैं न कभी भी घर बनाता,
कूड़ा करता इधर–उधर
पकड़ आदमी मुझे नचाता
तब भी राम भक्त कहलाता

उत्तर – बन्दर

9. हरा–हरा है प्यारा सा है
लेकिन मुँह पर लाली
गोल है आँखे सुंदर पक्षी
पहने कंठी काली

उत्तर – तोता

10. एक कली जो बड़ी अनोखी
बागों में नहीं खिलती है।
घर हो या दफ्तर में
दीवारों पर मिलती है।

उत्तर – छिपकली

11. हमने देखा ऐसा बन्दर,
जो उछले पानी के अन्दर

उत्तर – मेंढ़क

12. एक बहादुर ऐसा वीर,
गाना गाकर मारे तीर।
रोगों को लाता है पास,
झटपट, कर दो उसका नाश।।

13. बिन बोले वे कह देती हैं
जाने कितनी बातें,

उत्तर – आँखें

14. एक गुफा के दो रखवाले
दोनों लम्बे दोनों ही काले

उत्तर – मूँछ

विशाखा चेलानी
कक्षा–8 'ब'

कविता

प्रकृति की गोद में सौंदर्य का आभास तुम,
भोर की लाली में जग का उजास तुम,
चाँद की चांदनी में हो पलता ख्वाब तुम,
सावन की बूंदों में रिमझिम फुहार तुम,
गीत की धुन में हो राग मल्हार तुम,
प्रिये मेरे जीवन में बहती रसधार तुम।

मनु की कृति में हो सबसे नायाब तुम,
मेरे पल हर पल की हो मधुर याद तुम,
मेरे जीवन का इकलौता अरमान तुम,
इबादत में उठी अजान, बाइबिल, गीता, कुरान तुम,
उम्मीद की किरण आशा का आधार तुम,
प्रिये मेरे जीवन में बहती रसधार तुम।

मेरी प्रेरणा मेरी संवेदना मेरा विश्वास तुम,
तुम्हारा क्षितिज मैं, मेरा अनंत आकाश तुम,
तुम्हारी धड़कन मैं, मेरा सर्वस्व संसार तुम,
तुम्हारा सार मैं, मेरे तो सुबधार ही तुम,
प्रिये मेरे जीवन में बहती रसधार तुम।

विशाखा चेलानी
कक्षा–8 'ब'

कविता

शब्दों का खेल कविता
अक्षरों का मेल कविता
तुक से तुक मिलाया तो
लो बन गई कविता
देशकाल को पार कर
लो पास आ गई कविता
स्वरों से नहाई
लय में सुनाई
छन्द के बन्ध खोल दिए तो
मन के आसमान में ऊपर
उड़ती चली कविता
शब्दों का खेल कविता।

मनीषा
कक्षा–6 'अ'

तू खुद को बदल

दरिया की कसम मौजों की कसम,
ये ताना बाना बदलेगा।

तू खुद को बदल, तू खुद को बदल,
तब ही तो जमाना बदलेगा।

तू चुप रह कर जो सहती रही,
तो क्या ये जमाना बदलेगा।

तू बोलेगी, मुँह खोलेगी,
तब ही तो जमाना बदलेगा।

दस्तूर पुराने सदियों के,
ये आये कहाँ से क्यों आये।

कुछ तो सोचों, कुछ तो समझो,
ये क्यों तुमने है अपनाये।

ये पर्दा तुम्हारा कैसा है,
क्या ये मजहब का हिस्सा है।

कैसा मजहब, किसका पर्दा,
ये सब मर्दों का किस्सा है।

आवाज उठा, कदमों को मिला,
रफ्तार जरा कुछ और बढ़ा।

मशरिफ से उठो, मगरिब से उठो,
उत्तर से उठो, दक्षिण से उठो,
गांवों से उठो, शहरों से उठो,
फिर सारा जमाना बदलेगा।

हेमन्त कुमार
कक्षा–12 'विज्ञान वर्ग'

दृष्टिकोण

देखा है हमने भी जिन्दगी को करीब से,
बात कुछ बनती नहीं सिर्फ नसीब से,
होते नहीं ख्वाब पूरे खोखले इरादों से।

और चलती नहीं जिन्दगी मरे हुए वादों से,
कि मंजिल को पाना इतना आसान नहीं है।

चलते है लोग मगर दिशा का ज्ञान नहीं है,
होंगे शायद कुछ, ऐसे भी इस जहाँ में,
जो साँस तो ले रहे है, पर उनमें भी जान नहीं होती।

पर कदम–कदम पर यही पाया है
गुरूओं तथा किताबों ने यहीं सिखाया है।

करना है चमत्कार तो भीतर से
खुद को मजबूत करना होगा,
आती–जाती साँसों में उत्साह का प्रवाह लाना होगा।

और परिस्थितियाँ अनुकूल रहे या न रहे।
पर, अपने दृष्टिकोण को मजबूत बनाना ही होगा।

मो. जैनुल
कक्षा–6 'अ'

चाँद से थोड़ी सी गप्पे

गोल है, खूब मगर
आप तिरछे नजर आते हैं जरा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों जड़ा
सिर्फ मुँह खोले हुए है अपना
गोरा–चिट्टा
गोल–मटोल
अपनी पौशाक को फैलाए हुए चारों सिम्ट।
आप कुछ तिरछे नजर आते हैं जाना कैसे
–खूब हैं जोकि?
वाह जी वाह
हमको बुद्धू ही निरा समझा है
हम समझते ही नहीं जैसे कि–
आपको बीमारी है
आप घटते है तो घटते ही चले जाते हैं।
और बढ़ते है तो बस यानि कि
बढ़ते ही चले जाते है
दम नहीं लेते है जब तक बिलकुल ही
गोल न हो जाएँ
बिलकुल गोल
यह मरज अच्छा ही नहीं होने में.....
आता है।

संकलन कर्ता
मुस्कान
कक्षा–6 'अ'

चुटकुला

1. एक महिला अपनी सहेली के पास पहुँची। छोटे बच्चे को देखकर सहेली ने कहा– इसकी आँखें बिल्कुल माँ जैसी है।

माँ बोली– और साया बाप का। बच्चे का बड़ा भाई बोल उठा पतलून बड़े भाई की है।

2. **बाप–** बेटा गम न करो, भाग्य में फैल होना लिखा था तो हो गया

   बेटा– तब तो बहुत अच्छा हुआ यदि में मेहनत करता तो सारी मेहनत बेकार जाती।

3. **बड़ी बहन–** मैं जब गाना गाती हूँ, तो तू बाहर क्यों खड़ी रहती है ? छोटी बहन– मैं गाना नहीं गा रही हूँ लोगों को यह बताने के लिए।

रोहित कुमार
कक्षा–4 'अ'

स्वच्छता

पूरे देश का नारा हो, देश साफ हमारा हो।
न होगा डेंगू, न होगा मलेरिया।
जब साफ रहेगा इंडिया।।

उज्ज्वल रहेगा तभी भविष्य।
जब साफ दिखेगा भारत का दृश्य।।

जब आऐंगे सब भारतीय साथ।
न दिखेगा इस देश में दाग।।

आज सच करके दिखाऐंगे।
भारत को हम स्वच्छ बनाऐंगे।।

दीपा कुमारी
कक्षा–8 'अ'

मत बाँटो इंसान को

मंदिर–मस्जिद–गिरजाघर ने
बाँट लिया भगवान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को।।
अभी राह तो शुरू हुई है,
मंजिल बैठी दूर है।
उजियाला महलों मे बंदी
हर दीपक मजबूर है।।
मिला न सूरज का संदेशा,
हर घाटी–मैदान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा,
मत बाँटो इंसान को।।
अब भी हरी भरी धरती है,
ऊपर नील वितान है।

संकलन कर्ता
शिवानी रघुवंशी

कविता

बाल विवाह

विवाह का मतलब न जाने।
और बाल विवाह करने चले।
इसी के कारण, लाखों की जिंदगी,
तबाह करने हैं ये चले।
समझने की कोशिश ही नहीं की
बाल विवाह श्राप भी है, अभिशाप भी है।
बच्चों को पैदा होने से पहले ही मार दिया।
उनकी हँसती–खेलती जिंदगी को एक
इत्तेफाक बना दिया।
क्यों उनकी जान के दुश्मन बनें,
कभी यमराज तो कभी,
यमराज के दूत की तरह लगे।
लोग बाल विवाह से इतने खुश हैं कि,
बच्चों को जीते–जागते शमशान पहुँचाया।
करती बस यही प्रार्थना आपसे,
आप भी अपनी राय बताइए।
रोकिए इस बाल विवाह की प्रथा को,
ताकि बच्चे आगे बढ़ सकें,
ताकि बच्चे आगे पढ़ सकें।

कुम कुम
कक्षा–8 'अ'

कोटा की शान

देखो कोटा में वो बरसात की शाम,
वो दशहरे मेले का जाम।
वो चम्बल गार्डन की हवा,
वो एम.बी.एस. अस्पताल की दवा,
वो सिटी मॉल की शॉपिंग।
वो दोस्तों से मोबाइल पर टॉकिंग,
वो आई.आई.टी की पढ़ाई।
वो पानी पूरी की खटाई,
वो अमर ढ़ाबे का खाना।
जिसका सारा जहाँ है दिवाना,
वो सोयाबीन का तेल।
वो केन्द्रीय विद्यालय स्कूल की पढ़ाई व खेल,
वो गोदावरी धाम की सड़के।
जहाँ अनेक दिल धड़के,
वो कोटा डोरियाकी साड़ियाँ।
वो चम्बल की बहती नदियाँ,
वो एल.जी.क़ा गुलकन्द।
वो किशोर सागर में विसर्जन का आनंद,
वो मस्ती की रातें,
ऐसी हैं कुछ कोटा की बातें।

सलोनी कुमारी
कक्षा–8 'अ'

मैं बोझ नहीं इस धरती पर''

1. शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा।
2. चलते–चलते थक गई कंधे पर बिठा लो ना पापा।
3. अंधेरे से डर लगता है सीने से लगा लो ना पापा।
4. मम्मी तो सो गई आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा।
5. स्कूल तो पूरी हो गई अब कॉलेज जाने दो ना पापा।
6. पाल पोस कर बड़ा किया अब जुदा तो मत करो न पापा।
7. अब डोली में बिठा ही दिया तो आँसू तो मत बहाओ न पापा।
8. आपकी मुस्कुराहट अच्छी है एक बार मुस्कुराओ न पापा।
9. आपने मेरी हर बात मानी एक बात और मान जाओ न पापा।
10. इस धरती पर बोझ नहीं मैं दुनियाँ को समझाओं न पापा।

मोनिका मीना
कक्षा–8 'अ'

मच्छर चालीसा

जय मच्छर चालीसा उजागर,
तुम हो अति रोग के सागर।
गुप्त मार्ग से घर तुम हो आते,
विकृत रूप धर तुम काट जाते।
मलेरिया के तुम ही दाता,
तुम वायरस के छोटे भ्राता।
मच्छरदानी काम न आवे,
मॉर्टिन भी न असर दिखावे।
डंक तुम्हारा हर कोई पावे।
मच्छर देव से बचो–बचाओ,
सावधान रहकर दूर भगाओ।
जो जन मच्छर चालीसा गावें,
चिकन गुनिया उसके पास न आवे,
चिकन गुनिया उसके पास न आवे,
डेंगू से भी छुटकारा पावे।

उत्कर्ष बन्धु
कक्षा–8 'अ'

राष्ट्रभाषा-हिन्दी

अभिमान है,
स्वाभिमान है।
हिन्दी हमारी जान है,
जान है,जहान है।।

हिन्दी हमारी शान है,
सुर है, लाल है,
नया भाव है,
हिन्दी हमारा गान है,
दिलों का उद्‌गार है
भाषा का संसार है।

हिन्दी हमारी संस्कृत का अवतार है।
विचारों की खान है,
प्रेम का परिधान है,
हिन्दी भाषा महान है।

बागों की बहार है,
राग में मल्हार है।
हिन्दी हमारा प्यार है,
देवों का वरदान है।।

राखी
कक्षा–8 'अ'

पानी कहाँ है ?

पानी कहाँ है ?
मटके में।
मटका कहाँ है ?
रसोई घर में।
रसोई घर कहाँ है ?
घर में।
घर कहाँ है ?
खेड़ली फाटक में।
खेड़ली फाटक कहाँ है ?
कोटा में।
कोटा कहाँ है ?
राजस्थान में।
राजस्थान कहाँ है ?
भारत में।
भारत कहाँ हैं ?
एशिया में।
एशिया कहाँ है ?
पानी में !!!

राखी
कक्षा–8 'अ'

सुविचार

- शिष्टाचार, नम्रता या विनय का कोई मूल्य नहीं है लेकिन इस का लाभ अधिक है। वह मनुष्य जिसमें नम्रता नहीं, इन्सान की शक्ल में जानवर है।

  –फ्रांसिस बेकन
- धूल से नीचे क्या होगा ? मगर वह भी अपमान सहन नहीं कर सकती, लात मारें तो सिर पर चढ़ती है।

  –रामायण
- जीवन का लक्ष्य सुख नहीं, चरित्र है।

  –क्लार्क
- हम जिस चरित्र का निर्माण करते हैं, वह हमारे साथ भविष्य में भी रहेगा।

  –डॉ. राधाकृष्णन

तुषार शर्मा
कक्षा–9 'अ'

अरे बेटी भी तो चाहिए

कहानियाँ सुनाने के लिए दादी चाहिए,
प्यार करने के लिए माँ चाहिए।

लड़ने के लिए बहन चाहिए,
खीर खिलाने के लिए मम्मी चाहिए।

बाते करने के लिए चाची चाहिए,
साथ निभाने के लिए पत्नी चाहिए।

जिद करने के लिए नानी चाहिए,
पढ़ाने के लिए अध्यापिका चाहिए।

उपहार लेने के लिए बुआ चाहिए,
अरे यह सब किरदार निभाने के लिए।
बेटी भी तो चाहिए।।

पलक सुमन
कक्षा–7 'ब'

बेटी बचाओं

बेटा वारिस है, बेटी पारस है।
है बेटा वंश, बेटी अंश है।
बेटा आन है, बेटी शान है।
बेटा तन है, बेटी मन है।
बेटा मान है, बेटी गुमान है।
बेटा संस्कार है, बेटी संस्कृति है।
बेटा राग है, बेटी बाग है।
बेटा दवा है, बेटी दुआ है।
बेटा भाग्य है, बेटी विधाता है।
बेटा शब्द है, बेटी अर्थ है।
बेटा गीत है, बेटी संगीत है।
बेटा प्रेम है, बेटी पूजा है।
''बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ''।।

मनाली सुमन
कक्षा–4 'ब'

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्र. 1. अमरीका की मुद्रा कौन–सी है ?
प्र. 2. 'भारत रत्न' पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली गायिका कौन है ?
प्र. 3. 'रोमियो एण्ड जूलियट' का लेखक कौन था ?
प्र. 4. सरस्वती जी का वाहन क्या है ?
प्र. 5. झारखण्ड राज्य पहले किस भारतीय राज्य का हिस्सा था ?
प्र. 6. एशियाई खेलों का आयोजन कितने साल बाद होता हैं ?
प्र. 7. किस नदी को 'बंगाल का शोक' कहते है ?
प्र. 8. दूध की शुद्धता की जाँच करने वाले यंत्र को क्या कहते है ?
प्र. 9. अकबर के दादा का नाम क्या था ?
प्र. 10. पंडित शिव कुमार शर्मा किस वाद्ययंत्र से सम्बन्धित है ?
प्र. 11. राजस्थान के किस शहर को 'झीलों का शहर' कहा जाता हैं ?

उत्तर– 1. डालर, 2. लता मंगेशकर,
3. विलियम शेक्सपियर, 4. मोर, 5. बिहार का,
6. चार साल बाद, 7. दामोदर को, 8. लेक्टोमीटर,
9. बाबर, 10. संतूर से, 11. उदयपुर में।

हर्ष राठौड़
कक्षा–8 'ब'

हार से जीतना सीखो

हार का मतलब यह नहीं की हम हार गए इसका मतलब है हम जीते नहीं हैं हार का मतलब यह नहीं कि हमने कुछ नहीं पाया इसका मतलब है हमने कुछ खोया नहीं हार का मतलब यह नहीं कि हम दूसरों की नजर में नीचे गिर गए, इसका मतलब है हम परफेक्ट नहीं ये हार ा मतलब यह नहीं कि हमने अपना समय बर्बाद कर दिया इसका मतलब है कि हमें बहाना मिला फिर से करने का हार का मतलब यह नहीं है कि हमें हार मान लेनी चाहिए इसका मतलब है कि हमें और मेहनत करनी है हार का मतलब यह नहीं की भगवान ने हमारे साथ कुछ गलत किया बल्कि वे हमारे साथ कुछ अच्छा करना चाहते होंगे।

उत्प्रेक्षा
कक्षा–8 'ब'

मौका

जो मिले मौका तो पकड़
न खुद को तू यों ही जकड़
जो बदलना पड़े तो बदल
क्या करेगी ये तेरी अकड़ ?

किस्मत एक मौका सबको देती है
तेरा नंबर भी आया है,
तुझे कुछ भाए न भाए
तू मौके को भाया है।

अनदेखा अनजाना खुद को डराता है
पर खोज ही तो असली जीवन कहलाता है
कुछ अंदर, कुछ बाहर खोजता जा
नई–नई कहानी तू रचता जा

जो तू रूकेगा, जग रूकता दिखेगा
जो चल पड़ा तो जग साथ चलेगा
तेरी तुझसे जो भी अभिलाषा है।

ज़िन्दगी का बहाव जो गंगा–जमुना
तो यही मौका ही तेरी नौका है
उठा ले पतवार ओ मेरे माही
तुझे किसने अब रोका है।

स्वप्न युग

''खुद को खुद से बड़ा सपना बनाते हैं,
ये ही सपने जीने का मकसद दे जाते हैं।
सपनों को हम खुद पर छा जाने देंगे,
जिंदगी में ये ही हमें जाने देंगे।।''

कर्म युग

कर्म युग में रहना, मेरा धर्म है,
आलस से बढ़कर न कोई अधर्म है।
कर्मों में अपनी खुशी तू ढूँढ़ ले,
इसी में छुपा जिदंगी का मर्म है।

जीवन युग

खुद को खोए बिना कुछ भी पाया जाता नहीं है।
लहर बने बिना किनारे आया जाता नहीं है।
जाग उठ चल दे, खुद को बनाने की राह पर
जीवन और किसी तरह सफल बनाया जाता नहीं है।

माहिर आलम
कक्षा–8 'अ'

समझें और जानें

एक बार 0 से 9 तक की संख्याओं के बीच झगड़ा हो गया। संख्या 9 ने कहा मैं ताकतवर हूँ और संख्या 8 को झापट दिया, संख्या 8 ने कहा मैं ताकतवर हूँ और 7 को चाटा मारा, इसी प्रकार 7 ने 6, 6 ने 5, 5 ने 4, 4 ने 3, 3 ने 2, 2 ने 1 के साथ ऐसा किया अब संख्या 1 बारी थी उसे 0 को चाटा मारना था, परन्तु उसने ऐसा न किया बल्कि संख्या 0 से कहा कि तुम मेरे मित्र हो और उसके पहले जाकर बैठ गया और अब वह सबसे ज्यादा शक्तिशाली संख्या बन गया।

हमें भी अपनी जिन्दगी में यहीं रास्ता अपनाना चाहिए साथ मिलकर रहना चाहिए। हमें अपने दोस्तों से झगड़ा नहीं करना चाहिए क्योंकि अगर दोस्त खो जाए तो दोबारा नहीं मिलता।

दीपेश सिंह
कक्षा–12 'विज्ञान'

''अजगर गुरू आलसी चेला''

मौसम था बरसात का भादौ आधी रात का,

आश्रम श्रम से दूर था सुनो वहाँ की बात,

सुनो वहाँ की बात जलेबी, दूध, पराठें,

खा पीकर गुरू, चेले ले रहे थे खर्राटें,

इतने में गुरू ने आवाज लगाई

क्यों रे चेले बत्ती अब तक नहीं बुझाई,

चेला अड़ियल आलसी गुरू अजगरानन्द,

कहने लगा कि मान्यवर आँखें कर लो बन्द,

आँखें कर लो बन्द समझ लो बत्ती बुझेगी,

मुँह ढक कर सो जाओ समस्या स्वयं सुलझेगी,

गुरू बोला आलस के चरखा यह बतला,

बंद हो गई या हो रही बरखा,

चेला बोला बाहर से आई है अपनी बिल्ली,

हाथ लगा के देखिए सूखी है या गीली,

गीली हैं तो जानिए चालू हैं बरसात,

सूखी है तो खत्म हुई बात,

खत्म हुई बात न आती तुझको लज्जा,

टाल रहा हर काम चल बंद कर दे दरवाजा,

दो मैंने कर दिए हैं गुरूवर सोने दीजिए

तीसरा काम आप स्वयं कर लीजिए

अमित कुमार जैन

कविता– पाकिस्तान

पाकिस्तान तुझे भारत का रूप दिखाना ही होगा,
बहुत रख लिया संयम, अब तो सबक सिखाना ही होगा।

तूने हमको नहीं, हमारी इज्जत को ललकारा है,
भूल गया तू पहले हमसे, दो–दो लड़ाई हारा है।

फिर भी तूने हिम्मत की है, पत्थर से टकराने की,
अब की बार नहीं छोड़ेंगे, ठानी तुझे मिटाने की।

तुझे पड़ौसी कहते अब तो, शर्म हमें भी आती है,
बीस जवानों की कुर्बानी, कायर तुझे बताती है।

तेरी नापाकी हरकत का, तुझको सबक सिखाना है,
दुनिया के नक्शे से हमको, पाकिस्तान मिटाना है।

अज्ञानी तू हमको परमाणु हमले की धमकी देता है
लेकिन तुझको पता नहीं, तू किस डाली पर बैठा है।

भारती की ताकत का शायद तुझको, भान नहीं होगा,
टकराया इस बार तो शायद पाकिस्तान नहीं होगा।

पहले जो भी गलती की, इस बार नहीं दोहराएँगे,
पाकिस्तानी संसद पर अपना झंड़ा लहरायेंगे।

सलीम 'स्वतंत्र'
(लोको पॉयलट)
मुख्या. कोटा – प.म.रेल

अच्छी आदतें

ईश्वर का दिया, कभी अल्प नहीं होता।
जो टूट जाये, वो संकल्प नहीं होता।
हार को लक्ष्य से, दूर ही रखना।
क्योंकि जीत का, कोई विकल्प नहीं होता।
जिदंगी जीना, आसान नहीं होता।
बिना संघर्ष, कोई महान नहीं होता।
जब तक न पड़े, हथौडे की चोट।
पत्थर भी, भगवान नहीं होता।

दीपेश सिंह
कक्षा–1 2 'विज्ञान'

महाकवि भवभूति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(i) भवभूति : स्थितिकाल, व्यक्तित्व तथा कर्तत्व स्थितिकाल

भवभूति संस्कृत साहित्य के जगमगाते हुए रत्न है। महत्व की दृष्टि से कालिदास के अनन्तर इन्हें स्थान दिया जाता है। उनकी रचनाओं ने संस्कृत साहित्य को एक नवीन आभा प्रदान की है। उनके स्थितिकाल के सम्बन्ध में कुछ निश्चित प्रमाण उपलब्ध है यद्यपि उन्होंने स्वयं इस दिशा में कोई प्रकाश नहीं डाला है। वास्तव में महाकवि किसी देश–विशेष या काल विशेष से परिचित नहीं होते, उनका व्यक्तित्व तो इन सबसे ऊपर उठा हुआ होता है, वे सारे संसार की निधि होते है। इसीलिए संस्कृत कवियों ने प्रायः अपने विषय में मौन का ही सहारा लिया है, यह हर्ष का विषय है कि भवभूति के सम्बन्ध में कुछ ऐसे साक्ष्य हैं जिनसे उनकी स्थितिकाल के निश्चय करने में बहुत सहायता मिलती है।

(ii) व्यक्तित्व

भवभूति ने अपने नाटकों की प्रस्तावना में अपना परिचय दिया है। महावीर–चरित की प्रस्तावना से ज्ञात होता है कि वे विदर्भ बरार के पदमपुर नगर के निवासी थे। उन्होंने उदुम्बुरवंशी ब्राह्मणों के परिवार में जन्म लिया था। ये बड़े ही आदरणीय, धर्मनिष्ठ, सोमरस का पान करने वाले और वेद के ज्ञाता थे। भवभूति के पाँचवे पूर्वज का नाम 'महाकवि' था, 'उन्होंने 'वाजपेय' यज्ञ किया था। भवभूति के बाबा का नाम 'भट्टगोपा' था, पिता का नाम ' 'नीलकण्ठ' था और माता का जतुकर्णी था। इनके गुरू का नाम 'ज्ञाननिधि' था। वे वास्तव में ज्ञान के निधि ही थे।

भवभूति व्याकरण, न्याय, मीमांसा के अपूर्व पण्डित थे। उनका प्रारम्भिक नाम ' श्रीकण्ठ था और भवभूति उनका साहित्यिक नाम था जो कि 'गिरिजायाः कुचो वन्दे–भवभूति–सितानतनों तथा 'साम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः' जैसे पद्य लिखने से पड़ा था।

भवभूति बड़ी ही सच्चरित्रता, निष्ठा और मर्यादा से जीवन व्यतीत करने वाले थे। धर्म के प्रति उनमें गहन आस्था थी। इस पवित्रता की धवल धारा में अवगाहन करके उन्होंने जो कुछ दिया है, वह साहित्य–संसार की सचमुच अक्षय निधि है। भवभूति का व्यक्तित्व संस्कृत–साहित्य में की मधुरता और कटुता, अन्तः प्रकृति तथा ब्राह्मप्रकृति के कोमल ओर विकट दोनों रूपों का ग्रहण करने की क्षमता रखता है। भवभूति वे श्रीकण्ठ हैं जिन्होंने एक साथ चन्द्रकला की शीतल सरसता और विष की तिक्तता दोनों को जीवन के उल्लासमय तथा वेदना व्यथित दोनों तरह के पहलुओं को सहर्ष अङ्गीकार किया है।

(iii) कवित्व

मालती माधव– इसमें मालती और माधव के प्रेम और विवाह की काल्पनिक कथा चित्रित की गई है। भूरिवसु और देवरात क्रमशः पद्मावती और विदर्भ के राजमन्त्री थे। उन्होंने यह प्रण किया था कि वे अपने पुत्र–पुत्रियों का परस्पर विवाह करेगी। समय पर देवरात के पुत्र और भूरिवसु के पुत्री उत्पन्न हुई। भूरिक्सु देवराज के पुत्र माधव के साथ, अपनी प्रतिज्ञानुसार, मालती का विवाह करना चाहते हैं, परन्तु राजा का साला और मित्र (नर्मसुहृत) नन्दन मालती से अपना अपना विवाह करना चाहता है। राजा का समर्थन भी उसे प्राप्त है। माधव का एक साथी मकरन्द है और नन्दन की बहिन मदयन्तिका मालती की सहेली है। मालती और माधव एक शिव मन्दिर में मिलते हैं। वहीं मदयन्तिका को मकरन्द एक सिंह से बचाता है। तभी वे एक दूसरे पर अनुरक्त हो जाते है। इधर राजा मालती और नन्दन का विवाह कराने के लिए तैयार है। माधव अपनी प्रेम–सिद्धि के लिए में तन्त्र सिद्धि कर रहा है कि

उसे एक स्त्री की चीख सुनाई पड़ती है। वहाँ जाने पर उसे पता चलता है कि अघोरघण्ट और उसकी शिष्या कपाल कुण्डला मालती को चामुण्डा की बलि चढ़ाने का उपक्रम कर रहे है। माधव अघोरघण्ट को मारकर मालती को बचा लेता है। राजा के सैनिक ढूँढ़ते हुए श्मशान पहुँचते हैं और मालती को ले आते हैं। मालती और नन्दन के विवाह की तैयारी की जाती है परन्तु कामन्दकी (भूरिवसु की शुभ–चिन्तिका तापसी) की चतुरता से मकरन्द का विवाह नन्दन से हो जाता है और कामन्दकी शिव मन्दिर में ले जाकर मालती माधव का गन्धर्व विवाह करा देती है, इधर प्रथम मिलन पर मकरन्द नन्दन को पीट देता है, नन्दन वहाँ से चला जाता है। मदयन्तिका अपनी भाभी को समझाने जाती है, पर उसे अपना प्रेमी जानकर उसके साथ भाग जाती है परन्तु सैनिकों द्वारा मकरन्द पकड़ लिया जाता है। यह सुनकर माधव मालती को छोड़कर अपने मित्र की सहायता करने के लिए चल पड़ता है। इसी बची अपने गुरू का बदला लेने के लिए कपालकुण्डला मालती को चुराकर श्रीपर्वत पर ले जाती है। उधर सैनिकों और माधव–मकरन्द का भयङ्कर युद्ध होता है। राजा उनकी वीरता से प्रसन्न होकर उन्हें छोड़ देता है। माधव मकरन्द के साथ विक्षिप्तावस्था में विन्ध्य पर्वत पर मालती की खोज में घूम रहा है। वहीं कामन्दकी की शिष्या सोदामिनी बतलाती है कि मालती इसकी कुटिया में सुरक्षित है। इस समाचार को मकरन्द, भूरिवसु, मदयन्तिका आदि को देता है। बाद में मालती माधव के मिलन के साथ ही मकरन्द–मदयन्तिका का विवाह सम्पन्न हो जाता है।

उत्तररामचरित– भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इसमें कवि ने अपनी कल्पना का प्रयोग कर अदभुत् सृष्टि की है इसमें सात अङ्क है और इसमें रामचन्द्र जी के उत्तर चरित्र का वर्णन है। यह महावीरचरित का उत्तर भाग ही समझा जा सकता है। प्रथम अङ्क में राम को दुर्मुख नामक दूत से सीतापवाद विषयंक भूमिका बड़े ही कौशल से संयोजित की गई है, चित्रदर्शन के अवसर पर भी विनय और वीरता से युक्त हैं। तमसा, वासन्ती, आत्रेयी, नारी गुणों के साथ ही अपनी–अपनी भूमिकाएँ चित्रित करने में पूर्णतः सफल हुई है। अष्टावक्र, वाल्मिकी मितभाषी ऋषियों के रूप में चित्रित किये गये है। सुमन्त्र स्वामिभक्त वात्सल्यपूर्ण और नीतिज्ञ है। दण्डायन और सोधाक्ति अनध्यायप्रिय छात्रों का प्रतिनिधित्व करते है। ऋषि पत्नी अरून्धति परम साध्वी के रूप में हमारे सामने आती है। दुर्मुख तो दुर्मुख है ही।

(iv) सारांश

यह सब होने पर भी भवभूति को संस्कृत–साहित्य में बड़ा सम्मान प्राप्त है। उनके सम्बन्ध में विद्वानों ने अनेक प्रशस्तियाँ कहीं है, यहाँ कलेवर वृद्धि के भय से अधिक विवेचन नहीं किया जा रहा है। दो शब्दों में कतिपय दोष होते हुए भी भवभूति का व्यक्तित्व संस्कृत साहित्य में ऐसा प्रिय है जैसा कि भक्तों को भूति (भस्म) युक्तभव (शङ्कर) शरीर।

जयतु संस्कृतम्–जयतु भवभूति

इति

ज्योति मीना'
कक्षा–8 'ब'

चाणक्य्

चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री थे। वे 'कौटिल्य' नाम से भी विख्यात हैं। उनके द्वारा रचित अर्थशास्त्र राजनीति, अर्थनीति, कृषि, समाजनीति आदि का महान ग्रंथ है। **अर्थशास्त्र** मौर्यकालीन भारतीय समाज का दर्पण माना जाता है।

मुद्राराक्षस के अनुसार इनका असली नाम **'विष्णुगुप्त'** था। विष्णु पुराण भागवत आदि पुराणों तथा कथा सरित्सागर आदि संस्कृत ग्रंथों में तो चाणक्य का नाम आया है, बौद्ध ग्रंथों में भी इसकी कथा बराबर मिलती है। उनका जन्म पंजाब में अनुमानतः ईसा पूर्व में हुआ था। वह पाटलीपुत्र के निवासी थे और वहीं उनकी 395ई. में मृत्यु भी हो गई थी। उन्होंने तक्षशिला से ज्ञान प्राप्त किया था। अर्थशास्त्र और चाणक्यनीति इनके उल्लेखनीय ग्रन्था है। अपने समय में यह एक प्रसिद्ध विद्वान थे। कहते है कि चाणक्य राजसी ठाठ–बाट से दूर एक छोटी सी कुटिया में रहते थे। चाणक्य के शिष्य **कामंदक** ने अपने 'नीतिसार' नामक ग्रंथ में लिखा है कि विष्णुगुप्त चाणक्य ने अपने बुद्धिबल से अर्थशास्त्र रूपी महोदधि को मथकर नीतिशास्त्र रूपी अमृत निकाला था।

चाणक्य का अर्थशास्त्र संस्कृत में राजनीति विषय पर एक विलक्षण ग्रंथ है। पीछे से लोगों ने इनके नीति ग्रंथों से घटा बढ़ाकर वृद्धचाणक्य, लघुचाणक्य, बोधिचाणक्य आदि कई नीति ग्रंथ संकलित कर लिए। चाणक्य सब विषयों के पंडित थे। विष्णुगुप्त सिद्धांत नामक इनका एक ज्योतिष का ग्रंथ भी मिलता है। कहते हैं, **आयुर्वेद** पर भी इनका लिखा 'वैद्यजीन' नाम का एक ग्रंथ है। न्याय भाष्यकार वात्स्यायन और चाणक्य को कोई एक ही मानते हैं, पर यह भ्रम है जिसका मूल हेमचंद का यह श्लोक है।

वात्स्यायन मल्लनागः, कोटिल्य चाणकात्मजः।

द्रामिलः पक्षिलस्वामी विष्णु गुप्तोऽङ्गुलश्च सः।।

कोटिल्य के राज्य का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है। कोटिल्य का कहना है कि प्रजा की प्रसन्नता में ही राजा की प्रसन्नता हैं। प्रजा के लिए जो कुछ भी लाभकारी है, उसमें उनका अपना भी लाभ है। एक अन्य स्थान पर भी उन्होंने लिखा है **'बल ही सत्ता है, अधिकार है। इन साधनों के द्वारा साध्य है प्रसन्नता''।**

जसकौर सिंहरा'
कक्षा – 12 'अ'

गीता

भगवद्गीता भारतीय धार्मिक दार्शनिक साहित्य की अमूल्य कृति है। वेदों एवं उपनिषदों की विचारधारा स्फटिक की तरह उज्जवल होकर गीता में व्यक्त हुई है। यह आध्यात्म–विद्या (ब्रह्म–ज्ञान) का अपूर्व ग्रन्थ है। भगवद्गीता भारत के सुप्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत के भीष्म–पर्व का एक भाग है जिसमें भीष्म–पर्व के 23 वें से लेकर 40 वं तक कुल 18 अध्याय सम्मिलित हैं। इसके रचयिता का नाम स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं है। किन्तु महाभारत के संकलनकर्ता वेद व्यास को ही गीता की रचना का श्रेय दिया जाता है। वास्तव में अपनी विषयवस्तु की दृष्टि से यह अपने आप में इतनी पूर्ण ग्रन्थ की संज्ञा दी जाती है। यह कोई गुह्य ग्रन्थ नहीं है, जो विशेष रूप से दीक्षित लोगों के लिए लिखा गया हो और जिसे केवल वे ही लोग समझ सकते हो, अपितु एक लोकप्रिय काव्य है। इसमें अनेक और परिवर्तनशील वस्तुओं के उन साधकों की महत्वाकांक्षाओं को ओर वाणी प्रदान की गई है, जो परमात्मा के नगर की ओर आन्तरिक मार्ग पर चलना चाहते है। गीता का उपदेश किसी एक विचारक या विचारकों के किसी एक वर्ग द्वारा सोचकर निकाली गई प्रणाली के रूप में किसी एक वर्ग द्वारा सोचकर निकाली गई प्रणाली के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया, यह उपदेश एक ऐसी परम्परा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो मानव जाति के धार्मिक जीवन से प्रकट हुई है।

गीता के अनुसार आत्मतत्व :–

युद्ध के मैदान में स्वजनों को खड़े देखकर मोहित हुआ अर्जुन जब युद्ध के लिए स्पष्ट इन्कार कर देता है तब उसके मोह को दूर करने के लिए कृष्ण उसे अनेक प्रकार से समझाने का प्रयास करते है। इस सन्दर्भ में वे शरीर व आत्मा का भेद भी स्पष्ट करते है। कृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते है कि शरीर एवं आत्मा दोनों पूर्णरूपेण पृथक्–पृथक है। बचपन, यौवन, वृद्धावस्था, मृत्यु एवं जन्म सभी शरीर के विकार हैं। शरीर में होने वाले परिवर्तनों का अर्थ आत्मा में परिवर्तन नहीं है।

आत्मा वस्तुतः अमर शाश्वत है। यह हमारे जन्म से पहले भी थी, वर्तमान समय में भी हमारे शरीरों में है और भविष्य में भी अन्य शरीरों में रहेगी। जैसे बचपन युवावस्था यद्यपि शरीर की होती है औरवह विनष्ट हो जाता है, परन्तु जीवात्मा देह में उन अवस्थाओं का भोग करके शरीर के नष्ट होने पर दूसरे शरीर को प्राप्त होता है। बताया है कि शरीर नाशवान है जबकि आत्मा अविनाशी है। शरीर को प्रत्यक्ष, अनुमान आदि प्रमाणों के द्वारा मापा जा सकता है परन्तु आत्मा अप्रमेय है अर्थात् उसे प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध नहीं किया जा सकता है, वह तो स्वयं अपना प्रमाण है।

भगवद्गीता की मूलभूत शिक्षा :–

भगवद्गीता महाभारत की भांति विविध शिक्षाओं से युक्त है। सम्पूर्ण गीता वस्तुतः शिक्षाओं का एक भण्डार है। अर्जुन जो कि युद्ध के मैदान में अपने भाई–बन्धुओं तथा परिवार के लोगों को देखकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया, उसे भगवान कृष्ण ने समझाते हुए जो शिक्षाप्रद उपदेश दिये, वही तो गीता है। गीता की शिक्षा सरल भाषा में तथा सर्वजनोपयोगी है। गीता की प्रमुख शिक्षाओं को हम निम्न रूप में रख सकते है :–

(1) **कर्तव्य पालन :–** गीता मनुष्य को कार्य करने की शिक्षा प्रदान करती है। किंकर्तव्यविमूढ़ अर्जुन को देखकर कृष्ण ने प्रथम शिक्षा यही दी थी **'कार्य करो फल का विचार मत करो।'** गीता की मुख्य शिक्षा यही है कि कठोर दुःख और विपत्ति में भी अपने कर्तव्य और धर्म से नहीं हटना चाहिए। श्रीकृष्ण ने कहा कि मनुष्य कर्म को किसी भी समय नहीं रोक सकता है। यदि वह सन्यास भी लेगा तब भी कर्म तो करना ही पड़ेगा।

गीता

(2) ईश्वर भक्ति की प्रेरणा :– दूसरी महत्वपूर्ण शिक्षा जो गीता प्रदान करती है, वह है ईश्वर भक्ति। मनुष्य को आस्तिक होना चाहिए तथा भगवान का भजन करना चाहिए। गीता में अर्जुन को भगवान कृष्ण ने भगवद् भक्ति की सद्प्रेरणा प्रदान की है।

(3) सहिष्णुता और सार्वभौमिकता :– गीता मानव को सहिष्णु बनने की प्रेरणा देती है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि आस्थापूर्वक चाहे जिस किसी देवता की कोई आराधना करे मैं उसकी उस देवता में भक्ति को दृढ़ करता हूँ।

(4) आलस्य–त्याग व कर्मठ बनने की प्रेरणा :– भगवद्गीता मानव को यह शिक्षा देती है। गीता की स्वयं की शिक्षा भी सहिष्णुता और सार्वभौमिकता से ओत–प्रोत है। गीता में कर्म से विमुख होना निन्दनीय बताया गया है और कहा गया है कि जो लोग जीवित रहते हुए भी कर्म से भगना चाहते है वे वास्तव में मरे हुए के समान है।

(5) समस्याओं से संघर्ष की प्रेरणा :– गीता मानव को सतत् संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करती है–संघर्ष मानव से नहीं अपितु जीवन में आने वाली कठिनाइयों व समस्याओं से।

गीता की यह प्रमुख शिक्षा है कि किसी भी कठिन से कठिन स्थिति ही क्यों न हो मानव को उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए।

तनवी खान
कक्षा – 12 'अ'

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम :

(Dr. Abdul Kalam)

को न जानाति महतो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुलकलाम महोदयस्य नाम ? भारतस्य वैज्ञानिकप्रगतौ डॉ. कलाम महाभागस्य महत्त्वपूर्णं योगदानं वर्तते। परमाणु विज्ञाने अस्माकं देशः यावतीं प्रगतिमकरोत्, तत्र अस्यैव महापुरूषस्य महत् अवदानं विद्यते। पोखरणबम–विस्फोटेन यदा भारत देशः परमाणुशक्ति मतां देशानां कोटौ समाविष्टः तदा एतस्य वैज्ञानिकस्य चर्चा, न केवलं देशे अपितु निखिले विश्वे अभवत्। अयं वैज्ञानिक श्रेष्ठः सद्व्यवहारशीलः विद्वान्, चिन्तकः देशभक्तः सर्वेषाम् आदर्शकल्पः च विद्यते।

अस्य महापुरूषस्य जन्म तमिलनाडु प्रदेशस्य रामेश्वरं नाम्नि नगरे सामान्ये मुस्लिम परिवारेऽभवत्। अस्य पिता श्री जैनुलब्दीनः माता च श्रीमती आशियम्मा आसीत्।

हर्ष राठौड़
कक्षा – 8 'ब'

श्लोक

श्लोक–1. :
धर्मस्य हापकार्यस्य नार्थोऽर्थोपकल्पते नार्थस्य
धर्मेकान्तस्य कमो लाभाय हि स्मृतः कामस्य
नेन्द्रियप्रीतिर्लाभो जीवते यावता जीवस्य तत्वजिज्ञासा
नार्थो यश्चेह कर्मभिः।

श्लोक 2. :
नमस्ते विश्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मरूपिणे सहस्त्ररश्मये
नित्ये नमस्ते सर्वतेजसे नमस्ते रूद्रवपुषे नमस्ते
भवतवत्सलः पद्यनाभ नमस्तेऽस्तु कुण्डलाङ्गन्दभूषित
नमस्ते सर्वलोकानो सुजनामुषनोघन सुकृतं दुष्कृतं
चैन सर्व पश्यासि सर्वता सयदेव नमस्तेऽस्तु प्रासादे
मम भास्कर दिवाकर नमस्तेऽस्तु प्रभाकर नमोऽस्तुते।

श्लोक 3. :
कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिर्भव
संसारावर्णमग्रानां प्रसीद पुरूषोत्तम नमस्ते पुण्डरीकाक्ष
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु
महापुरूष पूर्वज गृहाणार्ध्य मया दत्तं लक्ष्मया सह जगत्यते।

श्लोक 4. :
स्मृतो हरसि पापानि यदि नित्यं जनार्दन दुःस्वप्तं
दुर्निमित्तानि मनसा दुर्विचिन्तितम् नारकं तु भयं
परलौकिकम् तेन देवेश मां रक्ष गृहाणार्ध्यं नमोऽस्तु
ते सदा भक्तिर्ममैवास्तु दमोदर तवोपरि।

अंजली यादव
कक्षा – 8 'ब'

मम् विद्यालय्

केन्द्रीय विद्यालय
अहस्त अस्त अतिमानः
मम विद्यालये क्रीडा क्षेत्रम।
स्वच्छमान्ये शरीरे नेत्रम्।।
पुस्तकानां विपुलं कोशः।
पुस्तकालये प्राप्यते परमः तोषः।
सर्वे गुरवः – प्रवीणाः
सन्ति न कोऽपि अनुभवहीनाः
केवन छात्रः लब्धप्रतिभा।
वर्धते तैः विद्या–आभाः।
अस्माकं संस्कृतशिक्षाम्।
दत्वा कुरूते संस्कृतिः रक्षाम्।।

सलोनी चोहान
कक्षा – 8 'ब'

मम् विद्यालय्

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित–नीति–लीनाम्।
मधुर–मञ्जरी–पिञ्जरी–भूत–मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसोलाः
कलायाः ललित–कोकिला–काकलीनाम्।।1।।
वहति मन्द मन्दं सनीरे समीरे
कालिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,
नतां पंकमालोक्य मधुमाधवीनाम्।।2।।
ललित–पल्लवे यादपे पुष्पपुञ्जे
मलयमा रूतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम्।।3।।
लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छेलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,
तवाकर्ण्यं वीणामदीनां नदीनाम्।।4।।

तुषार शर्मा
कक्षा – 9 'अ'

श्लोकः

1. सर्पाः पिबन्ति न च दुर्बलास्ते,
शुष्कैः तृणैः वनगजाः बलिनः भवन्ति।
कन्दैः फलैः मुनिवराः क्षपयन्ति कालं,
सन्तोष एव पुरूषस्य परं निधानम्।।

3. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहताः विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

4. विचरति आकाशे न तु वायुयानः
मांसभोजी न मृगाधिराजः।
दूरद्रष्टा न च योगिराजः
कथय कः एषः अति–तीव्रगामी।।

सलोनी
कक्षा – 8 'अ'

नित्यं कर्तव्यम् (क्त्वा ल्यप् च)

प्रातः काले ईशं स्मृत्वा, पितरौ प्रणमामि।
नित्यं कर्म च कृत्वोधानं, गत्वा विचरामि।।1।।

स्न्नानात् पूर्वं प्राणायामं, तदनु व्याख्यानाम्।
वृष्टिर्भवतु वा झञ्जझावतो हिमं पतेत् काभम्।।2।।

गृहमागत्य दुग्धं पीत्वा, पठामि निजापाठम्।
ततो भोजनं करोमि नित्यं षड्रसेयुक्तम।।3।।

विद्यालये च गुरूवर्याणां, करोमि सम्मानम्।
श्रद्धायुक्तो भूत्वैवाहम् अर्जयामि ज्ञानम्।।4।।

सायङ्काले क्रीडाक्षेत्रे, गत्वा क्रीडामि।
देवदर्शन ततो भोजनं, पाठं स्मरामि।।5।।

शयनात् पूर्वं राष्ट्रचिन्तनं, नित्यं कर्तव्यम्।
भारतमातुः दिव्यमन्दिरं, भवत पुनः भव्यम्।।6।।

लक्ष्मी झा
कक्षा – 8 'अ'

Gems of the Vidyalaya

Vidyalaya CBSE Toppers - 2016
Class XII

TANUSHREE CHAKRABORTHY
XII Science
93.6%

SHRISHTI
XII Science
92.2%

ASHISH CHATURVEDI
XII Science
90.4%

SUKHDEEP
XII Science
90.4%

RIDDHI VAJPAYI
XII Commerce
81.4%

RESHAM BISHT
XII Commerce
79.6%

Gems of the Vidyalaya

Vidyalaya CBSE Toppers - 2017
Class XII

GAURAV MALAV
XII Science
92.8%

SOHAIL SHAIKH
XII Science
91.6%

SIMRAN VERMA
XII Commerce
89.4%

MEGHA MEENA
XII Science
88.6%

MAMTESH BAGHEL
XII Science
86.0%

ANIL KUMAR
XII Science
82.8%

Gems of the Vidyalaya 2016

AMIT SHANKHWAR
X - CGPA 10

GAURAV SINGH RAGHAV
X - CGPA 10

HARSH KUMAR SAGAR
X - CGPA 10

HIMANI CHAUHAN
X - CGPA 10

KAJAL SHARMA
X - CGPA 10

NAMRATA GOCHER
X - CGPA 10

PARTH VASHISHTHA
X - CGPA 10

PRAFUL MEENA
X - CGPA 10

PRANAV GUPTA
X - CGPA 10

PRATEEK PATEL
X - CGPA 10

SARTHAK MAHAJAN
X - CGPA 10

Gems of the Vidyalaya 2017

Dharna Koundal
X - CGPA 10

Deeksha Fouzdar
X - CGPA 10

Anjana Singh Chouhan
X - CGPA 10

Alisha Saini
X - CGPA 10

Yogya Verma
X - CGPA 10

Tushar Dhakad
X - CGPA 10

Samarth Kumar
X - CGPA 10

Nawazish Sadaf
X - CGPA 10

Muskan Singh
X - CGPA 10

Jaya Kumari Jhawa
X - CGPA 10

Harshita Indoria
X - CGPA 10

Participants of
KVS National Sports Meet - 2015-16

S. NO.	NAME	GAME	REPORTING TIME	DATE OF COACHING CAMP & VENUE	VENUE	ESCORT
1	JYOTI KUMARI	ATHLETICS U-17(GIRLS)	13.09.2016 (A/N)	K.V. NO.5 GWALIOR, 14.09.2016 TO 23.09.2016	NATIONAL - DELHI, DATE - 26.09.2016 TO 30.09.2016	**Alka Shukla, TGT(English)**
2	SANDHYA MEENA	ATHLETICS U-14(GIRLS)				
3	FAIZ AHMED	CRICKET U- 17	19.09.2016(A/N)	K V MATHURA CANTT, 20.09.2016 TO 28.09.2016	NATIONAL - CHENNAI, DATE- 03.10.2016 TO 07.10.2016	**R S Prajapati,PRT**
4	PRINCESS SANSKRITI JAKHORIA	BADMINTON U-17(GIRLS)	14.09.2016 (A/N)	K.V.NO.1 AGRA,15.09.2016 TO 23.09.2016	NATIONAL - MUMBAI, DATE- 27.09.2016 TO 30.09.2016	**Shashi Meena, TGT(Maths)**
5	VIVEK SINGH	BOXING U-17	19.09.2016 (A/N)	BABINA CANTT,20.09.2016 TO 28.09.2016	NATIONAL -CHENNAI,DATE- 03.10.2016 TO 06.09.2016	**T. P. Ram TGT(Sst.)**
6	ABHISHEK MEENA	BOXING U-17				
7	PUSHPAL SINGH	BOXING U-19				
8	ANUJ KUMAR	BOXING U-19				
9	TARASHA GORI	SKATING U-14(GIRLS)	14.09.2016 (A/N)	K.V. MRN, MATHURA. 15.09.2016 TO 22.09.2016	NATIONAL - MUMBAI, DATE- 27.09.2016 TO 30.09.2016	**Nisha Singh, PRT**
10	ARYEEKA VERMA	SKATING U-14(GIRLS)				
11	SHIVANI KUMAR BANSIWAL	SKATING U-17(GIRLS)				
12	RISHABH RANAWAT	SKATING U-17(BOYS)	20.09.2016 (A/N)	MATHURA MRN, 21.09.2016 TO 29.09.2016	NATIONAL - HYDRABAD, DATE- 03.10.2016 TO 07.10.2016	**R. S. Prajapati, PRT**
13	NITIN MAHAWAR	SKATING U-19(BOYS)				
14	PARAMVEER SINGH	SKATING U-19(BOYS)				

STAND BY

1	ADITYA SHARMA	TAIKWANDO	02.09.2016 (A/N)	K.V. NO.2 AGRA CANTT. 03.09.2016 TO 12.09.2016	NATIONAL - KOLKATA, DATE - 15.09.2016 TO 18.09.2016	
2	MANVI GURJAR	CHESS U-19(GIRLS)				
3	JAI SINGH	CRICKET U-17				
4	HITENDRA SINGH PANWAR	BOXING U-17				
5	KHUSHI	ATHLETICS U-19(GIRLS				
6	SAAVYASAACHI SHEKHAR	ATHLETICS U-19(BOYS)				
7	LIPIKA SAHAY	BADMINTON U-19(GIRLS)				
8	ASHA KUMARI	BADMINTON U-17(GIRLS)				
9	SUSHIL KUMAR	SKATING U-17(BOYS)				
10	AMAN DHABORIYA	SKATING U-17(BOYS)				

Participants of KVS National Sports Meet - 2015-16

Jyoti Kumari
Athletics-17 (Girls)

Sandhya Meena
Athletics-14 (Girls)

Faiz Ahmed
Cricket U-17

Princess Sanskriti Jakhoria
Badmintion U-17 (Girls)

Vivek Singh
Boxing U-17

Abhishek Meena
Boxing U-17

Pushpal Singh
Boxing U-19

Anuj Kumar
Boxing U-19

Tarasha Gori
Skating U-14 (Girls)

Aryeeka Verma
Skating U-14 (Girls)

Shivani Kumari Bansiwal
Skating U-17 (Girls)

Rishabh Ranawat
Skating U-17 (Boys)

Participants of
KVS National Sports Meet - 2016

Nitin Mahawar
Skating U-19 (Boys)

Paramveer Singh
Skating U-19 (Boys)

Aditya Sharma
Taikwando

Manvi Gurjar
Chess U-19 (Girls)

Jai Singh
Cricket U-17

Hitendra Singh Panwar
Boxing U-17

Khushi
Athletics U-19 (Girls)

Saavyasaachi Shekhar
Athletics U-19 (Boys)

Lipika Sahay
Badminton U-19 (Girls)

Asha Kumari
Badminton U-19 (Girls)

Sushil Kumar
Skating U-17 (Boys)

Aman Dhaboriya
Skating U-17 (Boys)

Annual Sports Day- 2016-17

Special Achievement

Sh. M.R. Samdyan (H.M.) Receiving Regional Incentive Award From Shri Santosh Kumar Mall Commissioner K.V.S.

Smt. Kavitesh Bhardwaj PGT (CS) Receiving Certificate of Excellence

Saavya Saachi Shekhar XII (Comm.) Rashtrapati Puraskar Year-2016 (Bharat Scout & Guide)

Tulsi Sen Class III-B, Receiving Merit Certificate of International English Olympiad

N.C.C. Certificates Distribution by Principal

A Workshop on Online payment of School Fee

Sh. L.B. Sharma, PGT (Chem.) Interucting with Parents during PTA Meeting

Mock drill for extinguishing fire during vigilance awareness week

The Students of Class XIIth Science & Commerce on the occasion of Farewell Party

Students Presenting Group Song on the occasion of KVS Foundation Day

A Dance Performance by Students on the occasion of KVS Foundation Day

Shri V.K. Singh, A.C., K.V.S. (RO) Agra, blessing the students on their birthday

Hon'ble Sh. V.K. Sing A.C., K.V.S. (RO) Agra, Observing lesson during annual inspection

Activities organized on grand parents day

Prize Distribution to the winners by the chief guest on grand parents day

Painting Competition on the occasion of Rashtriya Ekta Diwas

Painting Competition on Nirmal Nadi Abhiyan

Rangoli Making by Raman House

Rangoli Making by Ashoka House

Rangoli Making by Shivaji House

Rangoli Making by Tagore House

Swachh Bharat Abhiyan Wall Painting

Kirti Raghav & Gaurav Raghav

Priyanka Kumari & Mamtesh Baghel

Saloni Bharadwaj & Khushi Singh

Bharti Yadav & Rakhi Singh

Neha & Asha

Khushi Akhand, Jyoti Kumari & Arjun

Pavas Singh

Gunjan Sharma

Nikita Verma

Ankita Choudhary

Vidyalaya Students Presenting Group Song on Republic Day

Vidyalaya Students Singing National Anthem on Republic Day

Artist Performing Classical Dance under the Series Routes 2 Roots

The classical Artist Presenting Amazing Classical Dance

Artist of Classical Dance giving tips of classical dance to Vidyalaya Students

Community Prayer under CC Activities

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान शपथ ग्रहण करते शिक्षक गण

विद्यालय स्तरीय सामाजिक–विज्ञान प्रदर्शनी में मॉडल के बारे में विवरण देती छात्राऐं

विद्यालय प्रांगण में केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 और क्रमांक 2 के शिक्षकों का सामूहिक भोज समारोह

विद्यालय छात्र–छात्राओं द्वारा पर्यटन स्थल मनाली (हिमाचल प्रदेश) का शैक्षिक भ्रमण

विज्ञान दिवस (सर सी.वी. रमन के जन्म दिवस) के अवसर पर माननीय प्राचार्य श्री एवं विज्ञान शिक्षकों द्वारा श्रद्धांजलि

वाणिज्य संकाय द्वारा आयोजित छद्म संसद में प्रस्तुति देते छात्र–छात्राऐं

विश्व अहिंसा दिवस (2 अक्टूबर) के शुभ अवसर पर विद्यालय में स्वच्छता अभियान का शुभारंभ

विद्यालय स्वच्छता अभियान के दौरान कक्षा–कक्ष की सफाई करते छात्र–छात्राऐं

नवरात्री महोत्सव में छात्राओं द्वारा डांडिया नृत्य प्रस्तुति

नवरात्री महोत्सव में विचित्र–वेशभूषा प्रतियोगिता के प्रतिभागी

विश्व योग दिवस के अवसर पर विद्यालय में सामूहिक योगाभ्यास में भाग लेते शिक्षण गण एवं छात्र–छात्राऐ

राष्ट्रीय एकता दिवस पर एकता रैली का शुभारंभ करते प्राचार्य

राष्ट्रीय एकता दिवस के दौरान एकता दौड़ में भाग लेते शिक्षक गण एवं छात्र–छात्राऐं

प्राचार्य श्री द्वारा राष्ट्रीय एकता संदेश एवं राष्ट्रीय एकता पर संभाषण

आजादी दौड़ समारोह में छात्र–छात्राओं को रवाना करते हुए प्राचार्य

आजादी दौड़ समापन के अवसर पर छात्र–छात्राऐं

आजादी पखवाड़ा के अन्तर्गत वीर जवानों हेतु शुभकामना संदेश प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्र–छात्राऐं

चिंतन दिवस के शुभ अवसर पर प्राचार्य श्री द्वारा दीप–प्रज्वलन

भारत स्काउट गाइड के महत्व व प्रयासों पर श्री सुनील कुमार शर्मा द्वारा अभिभाषण

भारत स्काउट गाइड संकुल स्तरीय द्वितीय सोपान परीक्षण शिविर में प्रतिभागी शिक्षक गण

सर्वधर्म प्रार्थना सभा में भाग लेते हुए स्काउट गाइड शिक्षक

भारत स्काउट गाइड विभाग के तत्वावधान में सामाजिक जागरूकता रैली का आयोजन

भारत स्काउट गाइड विभाग के होनहार नौनिहाल

शिक्षक दिवस के अवसर पर डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि अर्पित करते शिक्षक एवं छात्रगण

शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षिका समूह द्वारा खेल स्पर्धा में उमंगमयी प्रतिभागिता

शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्र–शिक्षकों के साथ मुख्य अतिथि महोद्या

शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक–शिक्षिकाओं के साथ मुख्य अतिथि महोद्या

शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्र–शिक्षकों के साथ मुख्य अतिथि महोद्या

शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्र समूह द्वारा नृत्य प्रस्तुति

हिन्दी भाषा सप्ताह के अन्तर्गत लघु नाटिका प्रस्तुत करती छात्राऐं

संस्कृत भाषा सप्ताह के अन्तर्गत संस्कृत समूह गान प्रस्तुत करती छात्राऐं

हिन्दी भाषा सप्ताह में मुख्य अतिथि श्री आर.पी. मीणा द्वारा हिंदी भाषा के महत्व एवं उपयोग पर सारगर्भित संभाषण

हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी गीत प्रस्तुत करती छात्राऐं

वरिष्ठ हिंदी शिक्षक श्री रामकिशन जाटव के सान्निध्य में हिंदी–भाषा ज्ञान प्रतियोगिता में भाग लेते छात्र–छात्राऐं

वरिष्ठ अंग्रेजी शिक्षक श्री रामचन्द्र के निर्देशन में अंग्रेजी भाषा कौशल एवं महत्व पर छात्र–छात्राओं द्वारा संभाषण

विद्यार्थी परिषद् 2016-17

विद्यालय परिवार

वार्षिकोत्सव – 'स्पंदन–2016' की झलकियाँ

सांस्कृतिक संध्या में छात्राओं द्वारा सामूहिक नृत्य–प्रस्तुति

नन्हें कलाकारों द्वारा बाल गीत पर मनोरम नृत्य प्रस्तुति

माध्यमिक परीक्षा 2016 में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को सम्मानित करते प्राचार्य

'रामायण' महाकाव्य पर लघुनाटिका की भव्य प्रस्तुति देते हुए छात्र–छात्राएँ

प्रिंसेज संस्कृति जखोड़िया एवं शैली शर्मा द्वारा आकर्षक युगल नृत्य प्रस्तुति

वार्षिकोत्सव के दौरान विद्यालय परिवार के सदस्य

Printed at: Nidhi_Printers#9460813430